जून 2026 | अंक : 06 | वर्ष : 03
E-MAGAZINE
www.sahitya24.com

साहित्य संसार

साहित्य, कला और संस्कृति को समर्पित

शब्दों से संवेदना तक, संस्कृति से सृजन तक

INTERNATIONAL ENVIRONMENT DAY & INTERNATIONAL YOGA DAY

SPECIAL EDITION

"एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य, एक भविष्य
योग से संतुलन, पर्यावरण से संरक्षण"

"प्रकृति के साथ सामंजस्य ही सच्चा विकास है।"

पर्यावरण संरक्षण
हमारी जिम्मेदारी, हमारा भविष्य

योग :
स्वस्थ शरीर, शांत मन, समृद्ध जीवन

विशेष लेख
पर्यावरण, योग, साहित्य और संस्कृति पर विशिष्ट लेखकों की कलम से

कला-संस्कृति
प्रकृति प्रेरित कला, भारतीय सांस्कृतिक विरासत और परंपराएं

योग करें, निरोग रहें
धरती बचाएं, कल संवारें

साहित्य | कला | संस्कृति | विचार | सरोकार

पढ़ें, सोचें, समझें और समाज को संवेदनशील बनाएं

Issued On : 29/05/2026 Claim ID. : IN-DL-2026-D8900

OMG® BOOK OF RECORDS

APPRECIATION RECORD

Very unique book about Teacher's Emotion

Rishabh Rajput

Delhi, India

He has written a very unique book about the teacher's Emotion " The child in me Teaches today ."

OMG Book of Records® Appreciate and Recorded in edition 2027

Authorised Signatory

Mumbai | E:omgbookofrecords@gmail.com | W:www.omgbooksofrecords.com

OMG Book of Records runs under OBWR Publishing Private Limited, Mumbai. Registered under Ministry of Corporate Affairs - Government of India

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

'साहित्य संसार' के इस विशेषांक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। वर्तमान अंक का विषय है— "पर्यावरण और योग", ये दोनों मानव जीवन के दो ऐसे आधार स्तंभ हैं जिन पर स्वस्थ, सुखी और संतुलित समाज की संरचना निर्भर करती है।

आज मानव अभूतपूर्व वैज्ञानिक प्रगति के युग में प्रवेश कर चुका है, किन्तु इसी प्रगति की अंधी दौड़ ने प्रकृति के संतुलन को गंभीर रूप से प्रभावित कर क्षति पहुंचाई है। वनों का कटान, जल एवं वायु प्रदूषण, वैश्विक तापमान में वृद्धि तथा प्राकृतिक संसाधनों का अनियंत्रित दोहन पृथ्वी के अस्तित्व के समक्ष चुनौती बनकर खड़े हैं। पर्यावरण केवल हमारे चारों ओर विद्यमान प्रकृति नहीं है, बल्कि यह जीवन का आधार, संस्कृति का संरक्षक और भविष्य की पीढ़ियों की धरोहर भी है। अतः पर्यावरण संरक्षण आज केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि मानवता का नैतिक दायित्व बन चुका है।

दूसरी ओर, आधुनिक जीवनशैली ने मनुष्य को शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक तनावों से घेर लिया है। ऐसे समय में योग भारतीय ज्ञान-परंपरा का वह अमूल्य उपहार है जो व्यक्ति को स्वयं से जोड़ता है। योग केवल व्यायाम नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक समग्र पद्धति है और एक उन्नत जीवन शैली भी है,त् यह शरीर, मन और आत्मा के मध्य संतुलन स्थापित कर जीवन को स्वस्थ, संयमित और सकारात्मक बनाता है। योग हमें बाहरी संसार के साथ-साथ अपने अंतर्मन के प्रति भी सजग बनाता है।

वास्तव में पर्यावरण और योग एक-दूसरे के पूरक हैं। स्वच्छ पर्यावरण स्वस्थ जीवन का आधार है और योग उस जीवन को सार्थकता प्रदान करता है। प्रकृति के निकट रहकर किया गया योग व्यक्ति को न केवल स्वास्थ्य प्रदान करता है, बल्कि उसे पर्यावरण के प्रति संवेदनशील भी बनाता है। जब मनुष्य अपने भीतर संतुलन स्थापित करता है, तब वह प्रकृति के साथ भी संतुलित संबंध स्थापित करने में सक्षम होता है।

इस विशेषांक में पर्यावरण संरक्षण, जैव विविधता, जल-संरक्षण, वृक्षारोपण, प्राकृतिक जीवनशैली तथा योग के विविध आयामों पर आधारित लेख, कविताएँ, आलेख, साक्षात्कार और विचारोत्तेजक रचनाएँ सम्मिलित की गई हैं। हमें विश्वास है कि यह अंक पाठकों में प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व तथा योग के प्रति जागरूकता का भाव विकसित करने में सहायक सिद्ध होगा।

आइए, हम सब मिलकर संकल्प लें कि प्रकृति की रक्षा करेंगे, पर्यावरण को स्वच्छ बनाए रखेंगे और योग को अपने दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बनाएँगे। यही स्वस्थ मानव, स्वस्थ समाज और स्वस्थ विश्व के निर्माण का मार्ग है।
आपके स्नेह, सहयोग और सतत मार्गदर्शन की अपेक्षा के साथ।

साहित्य 24 परिवार इसी प्रकार आप सबके लिए उपयोगी सामग्री का संकलन करता रहेगा और साहित्य प्रेमियों व समाज के सामने लाता रहेगा।

शुभेच्छु
कुँ० प्रवल प्रताप सिंह राणा 'प्रवल'
संपादक
साहित्य संसार

पर्यावरण बचाएं

पर्यावरण बचाने को वन संरक्षण करना होगा।।
वन उपवन भी रोपेंगे संवर्धन करना होगा ।।
जैसे दशकों पहले थे उतने वृक्ष लगाएंगे ।
एक पेड़ यदि सूखेगा चार गुने लगाएंगे।
जीवन सुख में करना है तो हरा भरा करना होगा।।
पर्यावरण बचाने को वन संरक्षण करना होगा।।
वन उपवन भी रोपेंगे संवर्धन करना होगा ।।..1
उद्योग धंधे लगेंगे तो दूषित जल निकलेगा।
कचरे के ढेरों से भी पर्यावरण बिगड़ेगा ।
सुरक्षित तरीके से इसका निष्पादन करना होगा।।
पर्यावरण बचाने को वन संरक्षण करना होगा।।
वन उपवन भी रोपेंगे संवर्धन करना होगा ।।...2
बिजली घर भी अपनी वायु दूषित करते हैं।
दूषित जल के साथ केमिकल भी होते हैं।
सारे उत्सर्जन का रीसाइक्लिंग करना होगा।।
पर्यावरण बचाने को वन संरक्षण करना होगा।।
वन उपवन भी रोपेंगे संवर्धन करना होगा ।।..3
थर्मल विद्युत उत्पादन भी बहुत प्रदूषण करता है।
पनबिजली से निश्चित ही शून्य प्रदूषण होता है।
वैकल्पिक या सौर ऊर्जा से इस को बदलना होगा।।
पर्यावरण बचाने को वन संरक्षण करना होगा।।
वन उपवन भी रोपेंगे संवर्धन करना होगा ।।..4
देश प्रदेश की सरकारें अपने स्तर पर काम करें।
हम सब भी संयम रखकर इसमें योगदान करें।
सभी तरह के अपना कर जीवन संरक्षण करना होगा।।
पर्यावरण बचाने को वन संरक्षण करना होगा।।
वन उपवन भी रोपेंगे संवर्धन करना होगा ।।..5

रचनाकार –
प्रवल प्रताप सिंह राणा 'प्रवल'
ग्रेटर नोएडा
7827589250

पर्यावरण

पर्यावरण हमारे जीवन का आधार है।।
इसकी रक्षा हम सब पर अधिभार है।।

वायु प्रदूषण पर्यावरण का दुश्मन है।
इस का उपचार ग्रीन ऊर्जा ईंधन है।

बिना प्रदूषण फैलाएं चले मोटरकार है।।
पर्यावरण हमारे जीवन का आधार है।।

इसकी रक्षा हम सब पर अधिभार है।। 1
पर्यावरण की रक्षा में हम पेड़ नहीं कटने देंगे।

हर वर्ष वर्षा ऋतु मैंने नए पेड़ भी रोपेंगे।
हरियाली बढ़ जाए देश में नीति की दरकार है।।

पर्यावरण हमारे जीवन का आधार है।।
इसकी रक्षा हम सब पर अधिभार है।। 2

औद्योगिक उत्सर्जन पर्यावरण विनाश करे।
कचरे का निष्पादन फिर पर्यावरण सुधार करें।

नए उपकरण लाकर निष्पादन अनिवार्य है।।
पर्यावरण हमारे जीवन का आधार है।।
इसकी रक्षा हम सब पर अधिभार है।। 3

पर्यावरण बचाने को हम को निश्चय करना होगा।
सरकार और समाज को साथ- साथ चलना होगा।

पर्यावरण सुरक्षा हो ये जन-जन की पुकार है।।
पर्यावरण हमारे जीवन का आधार है।।
इसकी रक्षा हम सब पर अधिभार है।। 4

रचनाकार –
अरुणा राणा , ग्रेटर नोएडा
9555788709

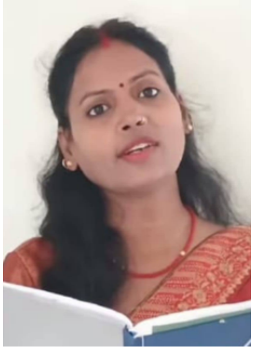

पर्यावरण

आओ पेड़ लगाकर पर्यावरण समझाते हैं,
उनकी सुरक्षा का अभियान चलाते हैं।।
जन्म से मृत्यु तक इनकी गोद में खेलते,
कुछ भी ना हो सके तो एक पेड़ लगाते हैं।।
आसमान तप रही है, सूनी गोद खाली है,
सारे जंगलों को क्यों लोग आग लगाते हैं।।
कुछ माफिया काटते हैं कुछ लोग चक्कर चलाते हैं,
साफ कर,जंगलों को, खूब पैसा कमाते हैं।।
जंगलों से भाग कर हाथी, शेर रोड में आते हैं,
इन्हें परेशान कर कुछ लोग उत्पात मचाते हैं।
जाएं तो जाएं कहां पशुओं की परेशानी है,
सरकार कुछ करो उनकी बेजुबानों की कहानी है।।
जंगल छीनो न इनसे यह बात पुरानी है,
पर्यावरण न बचाए तो निश्चित मौत हमारी है।।
आओ पेड़ लगाकर पर्यावरण समझाते हैं
उनकी सुरक्षा की अभियान चलाते हैं।।

रचनाकार
मंजू सोनी
लोहरदगा, झारखंड

टूटे पत्तों का गीत

एक पत्ता टूटकर फिर, डाल से बिछड़ा कहीं,
बूटा-बूटा रो रहा है, दर्द में डूबा यहीं
वो सुहानी शाम भी क्या, जब सभी अपने लगे,
हँसते-गाते दिन थे सारे, मन के सपने भी जगे,
साख पर जब तक रहे तो, साथ सबका मिल गया,
वक्त बदला, टूटते ही, हर सहारा छिन गया
आज वही राहों का राही ,चल पड़ा तन्हा कहीं
सूखते पत्तों की किस्मत, उड़ना होता है यहीं,
भीड़ में रहकर भी देखो, कौन किसका हो सका,
मन के भीतर जो था अपना, दूर जाकर छुप गया
नाम रिश्तों का रहा बस नाम का,
प्रीत अब कहीं और मिलती है नहीं ।
जानती हूँ साथ कोई, अंत तक रहता नहीं,
वक्त की इस भीड़ में अब, दर्द भी कहता नहीं।
साँस चलती तो है लेकिन, जिंदगी ठहरी कहीं,
बूटा-बूटा रो रहा है, दर्द में डूबा यहीं
नदियाँ, झीलें, झरनों का, साथ मिलता है मगर,
सागर से मिलने निकलना, पड़ता है तन्हा सफर

रचनाकार
प्रीति राही, बेंगलुरु

दो जून की रोटी

दो जून की रोटी नसीब नहीं,
दिनभर मेहनत करने पर भी।
देश की तकदीर बनानेवाले ,
भूखे पेट सो रहे हैं अभी भी।
आज भी देश के लोग कई,
रहते हैं सड़कों के किनारे।
तन पर उनके पूरे वसन नहीं,
जिंदगी कट रही राम सहारे।
आज भी बच्चों का जिंदगी,
कचड़े के ढेर में दबी हुई है।
अनाथ बच्चों की किस्मत,
अभी भी नहीं लिखी गई है।
उनसब के जिंदगी का सूरज,
न जाने कब तक उदित होगा।
दो जून की रोटी उन लोगों को,
न जाने कब तक नसीब होगा।

रचनाकार :--
डॉ. मुकेश कुमार दुबे "दुर्लभ" (विद्या वाचस्पति)
शिक्षक सह साहित्यकार, सिवान (बिहार)

पर्यावरण

पहले कितनी खुशहाली थी,
चारों ओर हरियाली थी,
आज ये धरती क्यों प्यासी है,
क्यों चारों तरफ़ उदासी है।।
बंजर होती जा रही धरती,
पेड़-पौधे भी कटते जाते,
जंगल का हो रहा सफाया,
हर दिन जीव-जंतु घटते जाते।।
गाँव शहर में बदल रहा है,
पर्वत भी अब झुकने लगे,
सूरज की तपती लपटों से,
धरती के रंग भी बुझने लगे।।
एक पौधा कोई लगाता नहीं,
लाखों पेड़ रोज़ गिराए जाते,
सोचो उस दिन क्या होगा जब,
हरियाली के लिए हम तरसते जाते।।
जागो, जागो मानव जागो,
अब तो चेतना अपनाओ,
अपनी पीढ़ी की छोड़ो चिंता,
आने वाली पीढ़ी के लिए वृक्ष लगाओ।।

रचनाकार
राही राज़, बेंगलुरु

स्वरचित © राधेश्याम यादव 'सुदर्शन', बेंगलूरु

तरुवर वन बाग बचाना होगा

जीवन संसार बचाना है तो तरुवर वन बाग बचाना होगा।
आबोहवा धरती आकाश को निर्मल बिमल बनाना होगा।।

कंकरीट के जंगल में स्वर्ण हिरण का मोह मिटाना होगा।
जीवन सुख शांति सिया को दूषण रावण से बचाना होगा।
जैव इंधन से धुम्र मुक्त मशीनें गाड़ी जहाज उड़ाना होगा।
सौर-पवन-पन-बिजली से गली गाँव शहर सजाना होगा।।

मेघालय के पर्वत प्यासे, सूखे बादल पोखर नल कुआँ।
देखो सुलग रही है धरती,नीला अम्बर है धुआँ-धुआँ।।
ऊसर बंजर मरु आर्द्रभूमि में कल्प तरु उगाना होगा।
मचले धरा पर बादल, ऐसी धरा हरा-भरा बनाना होगा।।

पर्वत हिमनद निर्झर झर-झर सागर स्वच्छ सजाना होगा।
प्यासी बावडी सरिता कल-कल जल तरंग बहाना होगा।
वर्षा जल अमृत संचित कर कुआँ पोखर भरवाना होगा।
नाले नहर तट ताल तलैया खेतों के मेड़ महकाना होगा।।

भूजल दोहन अनुशासित अपशिष्ट स्वच्छ बनाना होगा।
रिड्युसयूज रियुज रिसाइकिल स्वविवेक दिखाना होगा।
गंगा यमुना सिंचित सारस्वत नव वृंदावन खिलाना होगा।
राधेश्याम सुदर्शन जन गण मन निर्मल रास रचाना होगा।

स्वरचित © राधेश्याम यादव 'सुदर्शन', बेंगलूरु

जीवन की धड़कन – वृक्ष बचाइए (घनाक्षरी)

वृक्ष वन फूल बिन,लता कुंज कूल बिन,पपीहा कोयल कैसे रागिनी सुनाएगी?
अली कली फाग बिन,सुमन पराग बिन, कैसे बसंती मधुर मन महकाएगी?
बाग अमराई बिन, मेघ पुरुवाई बिन, बिरहा कजरी कैसे सावनी सुनाएगी?
तितली भरेगी रंग, मन में मृदु उमंग, कैसे इंद्रधनुही स्वप्न अम्बर सजाएगी??
वृक्ष देते कंद मूल, प्राणवायु फल फूल, धरती के सुखमूल वृक्ष उगाइए।
वृक्ष संजीवन सार, सृष्टि वृष्टि सूत्रधार, मिलन मनुहार प्यार वृक्ष रिझाइए।
वृक्ष जड़ चेतन के, जीवन स्पंदन के, धरती की धड़कन, वृक्ष बचाइए।
सुदर्शन हो सचेत, जन गण मन चेत, आंगने दुआरे खेत वृक्ष लगाइए।।
**

स्वरचित © राधेश्याम यादव 'सुदर्शन', बेंगलूरु

पर्यावरण दिवस

पर्यावरण दिवस मनाते हम,
फिर पेड़ों को कटवाते हम?
मुंह में राम बगल में छुरी
पेड़ों पर छुरी चलाते हम।।

आओ पर्यावरण बचाएं,
हर बार यही दोहराते हम।
पेड़ लगाकर करें सुरक्षा,
इसे आचरण न बनाते हम?।

न ही नारे न ही पोस्टर
पृथ्वी को बचा पाएंगे।
बस दृढ़ संकल्प हमारा हो,
पृथ्वी को हरित बनाएंगे।।

वृक्ष लगाकर,जल बचाकर,
धरा की लाज बचानी होगी।
लालच लिप्सा त्याग हमें,
ये प्यारी धरा बचानी होगी।।

रचनाकार
पूनम सारस्वत 'प्रज्ञा'
अलीगढ़ उत्तर प्रदेश

आलेख – वृक्ष और पर्यावरण

पेड़ों को देखकर बादल आते थे ज़मीं पर,उनसे मिलने उन संग झूमने। पेड़ कटे तो बादलों को नहीं मिलती राह इन तक आने की पृथ्वी पर छाने की।तो कभी आ ही नहीं पाते इधर और कभी कभी बौखलाहट में टूट पड़ते हैं किसी एक ही जगह पर ।किसी को प्रिय से यूं काटकर अलग कर दोगे हमेशा हमेशा के लिए तो वह असंतुलित तो होगा ही। पेड़ काटने का पाप किए हो और करते ही जा रहे हो,तो बादलों की बौखलाहट से कैसे बचोगे ?
वह तो ढूंढेंगे ही अपने प्रिय को हर गली हर कूंचे में विरही बन वेदना में जलते तड़पते।
बिफरेंगे यूं ही कभी कहीं कभी कहीं कभी बादल फटने की घटना में तो कभी अतिवृष्टि के रुप में। अपनी ग़लती बादलों पर मत थोपो सुधारो खुद को लौटा दो उनकी पृथ्वी उनको उसी रुप में जिससे वह राह भूलें नहीं। कि सदियों से पेड़ ही तो ट्रेल(लकीर) रहें हैं उनके लिए प्यासी धरती पर आकर बरसने के लिए। पेड़ बचा लो बादल आएंगे समय से और सही जगह पर फिर पृथ्वी और तुम तो स्वयं ही बच जाओगे ।पर्यावरण के प्रहरी बनो दुश्मन नहीं, रक्षक बनो भक्षक नहीं, ध्यान रहे पेड़ धरा का भूषण हैं। जैसे आभूषण रहित स्त्री शोभायमान नहीं दिखती वैसे ही वृक्षों रहित पृथ्वी बंजर कहलाती है।पेड़ उसके आभूषण ही नहीं उसके मातृत्व की मोहर भी है।जब पृथ्वी मां की तरह तुम्हारा भरण पोषण करती है तो तुम क्यों नहीं उसे मां का सा मान देते।

पर्यावरण बचाओ कहने से न पर्यावरण बचेगा न ही पृथ्वी और जीवन, इसके लिए ठोस प्रयास करने होंगे आज और अभी से तब ही पर्यावरण संरक्षण संभव होगा।यदि मानव यह समझ गया तो आने वाली पीढ़ियां उसे उसकी कर्तव्य परायणता के लिए याद रखेंगी अन्यथा तो लालची पूर्वज आने वाली पीढ़ी के हंता कहलाएंगे।

इसलिए पेड़ लगाओ और उन्हें काटो मत। जैसे पूर्वजों ने कहा था पेड़ काटना पाप है उसे उसी रुप में मान लो ।
वृक्ष धरा का हैं भूषण
काट इन्हें न बढ़ाओ प्रदूषण।

पूनम सारस्वत 'प्रज्ञा'
अलीगढ़, उत्तर प्रदेश।

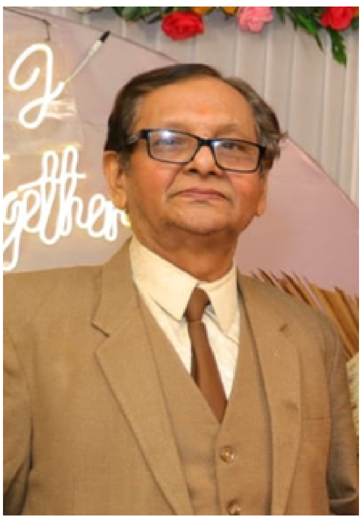

कभी 'सूनामी', कभी 'लैला', तो कभी 'फैट' है!
पता नही पृकृति के गर्भ मे क्या क्या सैट है?
पृकृति से प्रहसन तो अब मँहगा पड रहा है!
ग्लोबल वार्मिंग से सम्पूर्ण विश्व सड रहा है!!
पेड-पौधे काट सडकें और भवन बन रहे हैं!
खेत खत्म हो गए,बहुमँजिले भवन बन रहे हैं!!
अन्न जल की समस्या भी अब गम्भीर होगी!
पृकृति से दूर यह काया कैसे नीरोगी होगी?
ओजोन कीपरत मे भी अब छेद हो चुका है!
पृकृति को रौंद मानव अब देव हो चुका है!!
आलम गर यही रहा तो अब विनाश
सन्निकट है!

परमाणु युद्ध का भय, पर्यावरण प्रदूषण विकट है!!

रचनाकार
बोधिसत्व कस्तूरिया, आगरा, उत्तरप्रदेश

दर्द के साये मे

हर दर्द की अपनी एक कहानी है।
कुछ नई तो कुछ पुरानी है।

कुछ सुनी तो कुछ अनसुनी है,
कहीं दर्द प्यार हैं, मुहब्बत हैं
तो, कहीं घर की, दु:ख भरी कहानी हैं
दर्द तो सिर्फ अपनों से मिलता हैं
बाकी की क्या , वो तो वेगानी हैं

जो दर्द से गुजरता है, वही जानता है,
वरना तो लोग कहते हैं।

सब कहानी हैं
दर्द दिल से दिल को क्या होता हैं
जब पूछते हैं सब कैसे हों _
कहते हैं मस्त , मजे में__

पर दिल की दिल में रह जाती हैं
दिल जानता हैं - कितना मस्त हैं
कि पस्त हैं अपनी दर्द भरी कहानी से

हर दर्द की अपनी एक कहानी हैं
कुछ नई तो कुछ पुरानी है।

रचनाकार
जूही शर्मा
प्रधानाचार्य, बरेली

कहाँ गया चाँद

कहाँ हैं खग कहा हैं मृग
बस धुआँ उगलती गाड़ियां
बड़े शहरों की जग मग
फूल भँवरे वो पर्वतों की श्रेणी
खो गयी कही वो नदियों की कल कल
जहाँ सुन्दरी गूँथती थी वेणी
देखो उधर वो आग का गोला
जँगलों को निगलता बस छोटा सा शोला
कट रहे हैं जंगल हो रहे हैं भूस्खलन
वृक्ष तो वृक्ष पशु पक्षी भी कम
आखिर कब तक बस यही क्रम
मशीनों की भयानक खट खट में
खो गयी वो लताओं की वाटिका
कहाँ वो पुष्प पल्लवित
जहाँ कोयल की थी कूक
मानो मयूरों से नृत्य में
कहीं हो गयी चूक
देखो डालियों के झुण्ड में
था बया का वो घोंसला
नोच ही डाला किसी ने
किसी शैतान सा था होंसला
जंगल जंगल धुएँ के बादल
अब कही खो गयी वो शेर की मांद
छुप गया वो आसमां
दिखा न कब से
दादी का चाँद

रचनाकार
नीरज त्यागी 'नीरज'
गाजियाबाद

पर्यावरण

पर्यावरण और जीवन
धानी धरती, नीला जल ,
नीला ही आकाश,
नील गगन के नीचे पलता,
जीवन का विश्वास ।

धरती कहती मां मै तेरी,
तुम आंखों के तारे
मेरा सब कुछ तेरा ही है,
श्रम से छू ले प्यारे ।
मेरे अंदर शक्ति श्रोत जो,
अग्नि रूप में रहती,
वही तुम्हारी रग रग में,
ऊर्जा बन करके बहती।।
मुझसे जो मांगो दूंगी ,
सब कुछ मेरे पास ।
नील गगन के नीचे पलता,
जीवन का विश्वास।।
धानी धरती नीला जल है ,
नीला ही आकाश,..

सूर्य देवता भूमंडल को
आलोकित करते हैं,
ऊर्जा के संग दे प्रकाश
उपकार बहुत करते है।
सदा गगन का आमंत्रण
स्पर्श करो जानूँ?
क्षितिज चुनौती देता
 पा लो पार तभी मैं मानूँ।
नभ को छू लें गौरव से
ये वीरों का उल्लास।
नील गगन के नीचे पलता
जीवन का विश्वास।।
धानी धरती ,नीला जल.......,।

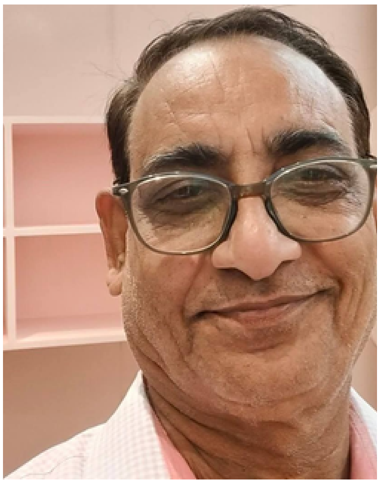

मेरे उर में ममता का जल
सदा रहा करता है,
इसे प्रदूषित मत करना
यह मेरा दिल कहता है।
जल है तो जीवन है
बिन जल कैसे जीवन संभव,
जल के बिन सूना लगता
सारा ही यश का वैभव ।
आंखों का पानी ना जाये
रहे भरोसा आस।
नील गगन के नीचे पलता
जीवन का विश्वास।।
धानी धरती,नीला जल.......,।

और हवा कहती है हर पल
तेरे संग रहूंगी ,
प्राणों को भोजन देने को
मैं संग संग बहूंगी ।
सांसों के झूले पर बैठी
 आशाओं की डोली ,
जहरीली ये हवा हो चली
पीड़ा भर के बोली ।
वृक्षारोपण प्राण वायु का
सदा सुरक्षित न्यास ।
नील गगन के नीचे पलता
जीवन का विश्वास।।
धानी धरती ,नीला जल.......,।

रचनाकार
डॉ रामानंद दीक्षित
(राष्ट्रपति पुरस्कार सम्मानित)
वाराणसी

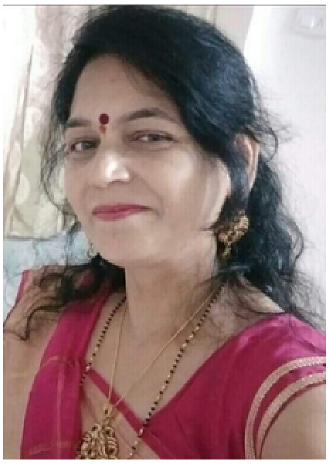

प्रकृति की उदारता

एक विराट वृक्ष को देखा मैने चीखते
जिसने संजोया संवारा संस्कृति सभ्यता को
कई टहनियों और विशालता मे
हरित वर्णीयपात ,गगन को चुनते
नित सैकड़ों दृश्य संजोते छाया ,फल देते
सहते
सडकों का विस्तार,पेट्रोल, डीजल मिश्रित जलवायु
उंघता शुष्क मौसम,बरसातों का सैलाब
प्रदुषित मिट्टी,कीटनाशक डी डी टी छिड़काव
नवयुग,नवचेतना देन बहुमंजिला इमारतें
खेतों और बगीचों की जगह गहन खदन
बोरिंग और बरसाती पानी का कंक्रीट मे बहाव
पहाड़ों को काट परिवहन,जंगल दोहन
नदियों को रोक,रुखमोड बाध परियोजना
जलाशय, नदियों मे कारखानों का रासायनिक बहाव,
समुंदर का बढता जलस्तर, बर्फ का पिघलाव
प्लास्टिक और कचरे के पहाड
मौन है वृक्ष,देखता मानव का बर्ताव
प्रतीक्षा है उसे अपने कट,मर जाने की
 जिसने पीढ़ियों को पल्लवित किया
पक्षियों, और प्रकृति को सम्भाला
जो देता है,O_2,CO_2,H_2O
पक्षियों को घरौंदा,प्रकृति को संतुलन
वही चीखता है उदास है आज
मनुष्य की बेवकूफियों पर।

रचनाकार
नीरजा सिंह
अमरावती (महाराष्ट्र)

पर्यावरण पर दोहे

1 -- पेड़ों को भी है मिला,कैसा ये वरदान।
मौन खड़े रहकर सदा,करते जग कल्याण।।

2 -- पर्वत नदियां वृक्ष हैं,धरती का श्रृंगार।
इनकी रक्षा से करें,जीवन का विस्तार।।

3 -- वृक्षारोपण से करो,धरती का श्रृंगार।
सूखे मौसम में मिले,सावन सा उपहार।।

4 -- रोकर कहती है धरा,धीरे से यह बात।
बच्चे मुझसे छीनते,मेरी ही सौगात।।

5 -- सूखे पोखर हो गए,बिन पानी के आज।
सूरज क्यूं बरपा रहा,धरती पर यूँ गाज़।।

6 -- ज़हर हवाओं में घुला,बहता चारों ओर।
धुआँ-धुआँ सा हो गया,सुंदर निर्मल भोर।।

7 -- कल-कल बहती कह रही,सुनो नदी का राग।
छीनो तुम मेरे नहीं,जीवन से अनुराग।।

पूजा श्रीवास्तव , गाजियाबाद

हमारा पर्यावरण_हमारी जीवन रेखा

आज हमारी धरती यूं क्यों हरीतिमा से वंचित सी है
शुष्क हुई सी शस्य श्यामला,भूगर्भ में ज्वाला प्रज्वलित है,
धधक रहा धरती का सीना,मौसम की गर्माहट से,
अम्बर ठिठका बिखरे बादल,शुष्कता की आहट से,

पर्वत पिघल रहे हैं नितप्रति,लगता ऊष्मा आयातित है,
अकस्मात मौसम परिवर्तन,ऋतु चक्र ही अपना बाधित है

कभी सुनामी की हलचल,कभी भूकंप से भू ही छोड़े छोर,
कभी जलधर होते विस्फोटक,कभी भूस्खलन का होता शोर..
कृषि प्रधान यह देश हमारा,वृक्ष कटान है रह रह कर,
निर्वस्त्र हो रही धरती है,चीख रही है सिसकी भर भर,

यदि भूमि के वृक्ष कटेंगे यूं,तो जल संचयन कहाँ होगा?
धरती की प्यास बुझेगी कैसे,हरियाली का क्या होगा?

होगी बंजर उर्वर धरती,यदि शहरीकरण निरंतर होगा,
पर्यावरण प्रदूषित होगा,अनियत ऋतु परिवर्तन होगा,

पौधारोपण अभियान चलाकर,जाग्रत हमको होना होगा
भौतिकता का जीवन तज,सुविधाएं सीमित करना होगा

संतुलन सृष्टि का बिगड़ रहा,मानव जीवन ही बिखर रहा
सांसो पर संकट की छाया,यूं जीवन काल ही सिमट रहा,

यदि नहीं समझ पाए अब तक हम,प्रकृति प्रदूषण सहना होगा
तन मन होंगे रोग ग्रस्त,बीमारू जीवन ढोना होगा।

रचनाकार
कुसुम सिंह "अविचल"
कानपुर

पर्यावरण : धरती माँ की पुकार

धरती माँ ने हमें पुकारा,
"बेटा, अब तो बनो सहारा।"
कटते वन और सूखते झरने,
देख-देख मन लगता डरने।

पेड़ों से ही जीवन पाते,
शुद्ध हवा और फल हम खाते।
नदियाँ देती अमृत धारा,
इनसे ही हो जग उजियारा।

मन मानव के लोभ है आया,
प्रकृति का संतुलन गँवाया।
धुआँ, प्रदूषण, प्लास्टिक कचरा,
जीवन पर है बादल गहरा।

आओ मिलकर वृक्ष लगाएं,
धरती को हम स्वर्ग बनाएं।
जल की हम हर बूंद बचाएं,
हरियाली का दीप जलाएं।

जब जंगल फिर से लहरायेंगे,
गीत मधुर फिर पंछी गायेंगे ।
स्वच्छ हवा जब बह जाएगी,
धरती फिर से मुस्काएगी।

आओ ऐसा काम करें हम ,
प्रकृति का सम्मान करें हम।
पर्यावरण की रक्षा करके,
उज्ज्वल भारत का निर्माण करें हम।

संदेश:
"पेड़ लगाना केवल एक कार्य नहीं, आने वाली पीढ़ियों को जीवन का उपहार देना है।"

रचनाकार
आचार्य विनीता लवानियाँ , बेंगलुरु

वृक्षों को हम बेटा मानें

वृक्षों को हम बेटा मानें,पेड़ लगाएँ, पेड़ लगाएँ ।
प्राणवायु की क़ीमत जानें,पेड़ लगाएँ,पेड़ लगाएँ ॥

बिन वर्षा,बिन स्वच्छ हवा के,तड़प तड़प मर जाना होगा
अभी समय है चेतो बन्धु , वर्ना कल पछताना होगा
बनो सयाने ,सोचो समझो , खून पसीने से पनपाएँ ।
वृक्षों को हम बेटा मानें , पेड़ लगाएँ , पेड़ लगाएँ ॥

महत्वपूर्ण नहीं कि तुमने , अब तक कितने पेड़ उगाए
गिनती गिनना छोड़ बताओ , उनमें से कितने बच पाए
पाल पोस कर बड़ा करें हम , उनके मात-पिता बन जाएँ ।
वृक्षों को हम बेटा मानें , पेड़ लगाएँ , पेड़ लगाएँ ॥

सरकारी अधिकारी ,खेल आँकड़ों का ,जो भी दिखलाएँ
आओ ऐसी भ्रष्ट व्यवस्था को,सब मिलकर सबक़ सिखाएँ
जनता की पूँजी को अपना माल , समझ वो उड़ा न पाएँ ।
वृक्षों को हम बेटा मानें , पेड़ लगाएँ , पेड़ लगाएँ ॥

छोड़ -छाड़ पिछली बातों को,अब तो आगे की सुख लेंगे
हरियाली की भेंट अनोखी ,धरती माता को हम देंगे
पर्यावरण सुरक्षा संकल्प , आओ हम सभी दोहराएँ ।
वृक्षों को हम बेटा मानें , पेड़ लगाएँ , पेड़ लगाएँ ॥

रचनाकार
डॉ . विजय नागपाल ‘नाविक ‘
गुरुग्राम

पर्यावरण: नीति, चुनौती और हमारा दायित्व

पर्यावरण आज का ज्वलंत विषय बन गया है और पूरे दुनिया का इस विषय पर ध्यान आकृष्ट किया है। जिसने हमें सतत विकास का रास्ता दिखाया। इसी से एजेंडा 21, UNFCCC और जैव-विविधता कन्वेंशन सामने आए। ओजोन परत को बचाने के लिए हुए मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल से दूसरी तरफ, कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन के उत्सर्जन से ग्लोबल वार्मिंग बढ़ रही है। ध्रुवों की बर्फ हर दशक लगभग 12% की रफ्तार से पिघल रही है, जिससे समुद्र का जलस्तर और मौसम और जलवायु की घटनाएं अप्रत्याशित रूप से बढ़ रही हैं।

पर्यावरण प्रदर्शन सूचकांक (EPI) 2024 में भारत 180 देशों में 176वें स्थान पर है, जो दिखाता है कि हमें अपनी वायु-गुणवत्ता सुधारने की सख्त जरूरत है। इस दिशा में प्रधानमंत्री मोदी ने 'अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन' और वैश्विक स्तर पर पर्यावरण अनुकूल जीवनशैली के लिए 'मिशन लाइफ़' (MISSION LIFE) की शुरुआत की है। साथ ही भारत ने 2030 तक 500 गीगावाट अक्षय ऊर्जा और 2070 तक नेट-ज़ीरो उत्सर्जन का ठोस लक्ष्य रखा है।

भारत ने स्कूलों में पर्यावरण शिक्षा को शामिल किया है। देश में पर्यावरण अधिनियम, एनजीटी, स्वच्छ भारत और नमामि गंगे जैसे कार्यक्रम लागू हैं, लेकिन यथार्थ स्तर पर नीतियों की सही निगरानी और क्रियान्वयन अब भी एक चुनौती बनी हुई है।

इतिहास गवाह है कि सुंदरलाल बहुगुणा के चिपको आंदोलन और 'फॉरेस्ट मैन' जादव पायेंग जैसे पर्यावरणविदों के प्रयासों ने हमेशा देश को राह दिखाई है। ऐसे ही साहसिक संरक्षण कार्यों के लिए 'अमृता देवी बिश्नोई वन्यजीव संरक्षण पुरस्कार' दिया जाता है। रेचल कार्सन ने अपनी किताब 'साइलेंट स्प्रिंग' से ही आधुनिक पर्यावरण जागरण की शुरुआत की थी। पर्यावरण ही जीवन का आधार है इसके बिगड़ने से जीवन असंतुलित हो जाता है।

इस समस्या में हमे घर और स्कूल से ठोस उपाय अपनाना होगा तभी व्यापक बदलाव सुनिश्चित होगा। स्कूल के स्तर पर बच्चे सिंगल-यूज़ प्लास्टिक के इस्तेमाल को पूरी तरह बंद कर सकते हैं और वेस्ट मैनेजमेंट (गीला-सूखा कचरा अलग करना) सीख सकते हैं। वहीं घर पर हम बिजली-पानी की बचत कर, वर्षा-जल संचयन (RAINWATER HARVESTING) अपनाकर, सीएफसी-मुक्त उपकरण चुनकर, प्लास्टिक घटाकर और पेड़ लगाकर एक जागरूक नागरिक की भूमिका निभा सकते हैं। ऐसा करने से बेहतर पर्यावरण का निर्माण होगा और आने वाली पीढ़ियां सुरक्षित रहेगी।

इसी पंक्तियों के साथ पर्यावरण सुरक्षा का संकल्प ले :-

पेड़ लगा लो मेरे भाई , हीट वेव से जीवन को बचाओ।
जीवन
सुरक्षित पर्यावरण के लिए हरित नीति को आजमाओ।

धरती करे पुकार, अब नीति और क्रियान्वयन जरूरी है।
सौर ऊर्जा और पौधे लगाकर जीवन को रोगमुक्त करना जरूरी है।

प्रस्तुतकर्ता
मणिशंकर दुबे रामरागी
बिलासपुर छत्तीसगढ़

विश्व पर्यावरण दिवस विशेष

प्रकृति, संतुलन और संवेदनशील जीवन का आह्वावान !

मानव सभ्यता के विकास की यात्रा प्रकृति की गोद में प्रारंभ हुई थी, किंतु आधुनिकता की अंधी दौड़ में हम उसी प्रकृति से दूर होते चले गए हैं। आज जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, जैव-विविधता का क्षरण और प्राकृतिक संसाधनों का अनियंत्रित दोहन हमें यह स्मरण करा रहा है कि पृथ्वी केवल हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन नहीं, बल्कि हमारे अस्तित्व का आधार है।पर्यावरण दिवस मनाना केवल औपचारिक आयोजन भर नहीं, बल्कि आत्ममंथन और सामूहिक जिम्मेदारी का अवसर बन गया है। आज आवश्यकता केवल पौधारोपण कर तस्वीरें साझा करने की नहीं, बल्कि जीवन के प्रत्येक निर्णय में प्रकृति के प्रति संवेदनशील होने की है।

----पर्यावरण संरक्षण अब सरकार,किसी एक तबके अथवा संस्था की जिम्मेदारी नहीं रह गई है। यह हमारे भोजन की थाली से लेकर यात्रा के साधनों तक, जल का उपयोग से और ऊर्जा की खपत तक हर छोटी बड़ी आदत से जुड़े प्रश्न है। आने वाली पीढ़ियों को केवल तकनीकी विकास नहीं, बल्कि स्वस्थ पर्यावरण,जीने योग्य पृथ्वी सौंपना भी हमारी नैतिक जिम्मेदारी है।

अति सर्वत्र वर्जयेत्

----चहुंओर तकनीक के दबदबे के इस दौर में हमें इस सरल और टिकाऊ जीवनशैली को अपनाने की ज़रूरत पहले से कहीं अधिक है, क्योंकि भले ही आज हमारे यान मंगल ग्रह तक पहुंच गए हों, पर वहां हम अब तक पानी नहीं ढूंढ पाए हैं। बिलकुल, यदि हम चाहते हैं कि हमारी आने वाली पीढ़ी उन मूलभूत सुविधाओं से वंचित न रहे जो आज हमारे लिए सहज-सुलभ हैं और जिनका अंधाधुंध दोहन करने से पहले हम नहीं सोच रहे,।आज केवल 'सस्टेनेबिलिटी' को जानना होगा बल्कि इसे अपनाना भी होगा। आज की आधुनिक तकनीक और मूलभूत जड़ों में यहां संतुलन एवं सामांजस्य होना आवश्यक है। इसका संबंध मनुष्यों के साथ सभी जीवों से है।

यह पृथ्वी हमें अपने पूर्वजों से मिली है पर यह हमारे ऊपर हमारी आने वाली पीढ़ी का ऋण है।सोचकर देखिए कैसा होगा हमारे आने वाले बच्चों का जीवन यदि उन्हें दिन-रात मास्क लगाना पड़े? अब यहां प्रयास के नाम पर किसी धरना प्रदर्शन,प्रवचन नहीं, सहजता से कुछ छोटे प्रयासों को अपने जीवन में अपनाकर स्थिरता की ओर कदम बढ़ाना होगा।

पर्यावरण: सह अस्तित्व की सनातन चेतना

---पर्यावरण केवल पेड़-पौधों, जल, वायु और भूमि का समूह मात्र नहीं है, बल्कि यह सम्पूर्ण जीवन का आधार है। मनुष्य, प्रकृति और समस्त जीव-जगत के बीच संतुलित सह-अस्तित्व ही पर्यावरण का वास्तविक स्वरूप है। भारतीय सनातन संस्कृति में पर्यावरण को केवल संसाधन नहीं, बल्कि चेतना और देवत्व का स्वरूप माना गया है। यही कारण है कि यहां पृथ्वी को "माता", नदियों को "देवी", वायु को "प्राण" और वृक्षों को "जीवनदाता" कहा गया है।

सनातन धर्म का मूल भाव प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करना है। वेदों और उपनिषदों में प्रकृति के प्रत्येक तत्व के प्रति कृतज्ञता का संदेश मिलता है। ऋग्वेद में पृथ्वी से प्रार्थना की गई—

"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः"

अर्थात् पृथ्वी मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूँ।

भारतीय परंपरा में तुलसी, पीपल, वटवृक्ष, नदियाँ, पर्वत और पशु-पक्षियों तक को पूजनीय माना गया। यह पूजा केवल आस्था नहीं, बल्कि प्रकृति संरक्षण की एक गहन सांस्कृतिक व्यवस्था थी।

"भारतीय संस्कृति में वृक्षों को केवल वनस्पति नहीं, बल्कि देवतुल्य माना गया है। बरगद, पीपल, आंवला, अशोक और आम जैसे वृक्षों में देववास की मान्यता रही है तथा आंवला अष्टमी और वट सावित्री जैसे अनेक क्षेत्रीय पर्व उन्हें समर्पित हैं। प्रकृति के प्रति यह श्रद्धा हमारे सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न अंग रही है। इसी प्रकार 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' और 'सादा जीवन, उच्च विचार' जैसे सूत्र संयमित उपभोग, संतुलित जीवनशैली और प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व का संदेश देते हैं, जो आज की 'सतत जीवनशैली (SUSTAINABLE LIVING)' की मूल अवधारणा से पूर्णतः मेल खाते हैं।"

---भारतीय संस्कृति सदियों से सीमित संसाधनों में संतोष, प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व और संयमित उपभोग की दिनचर्या पर आधारित रही है !एवं यही हमारी सभ्यता की पहचान हैं। किंतु आधुनिक उपभोगवाद, दिखावे की संस्कृति और अंधाधुंध संसाधन दोहन ने उस मूल चेतना से दूर कर दिया !
विडंबना यह है कि जिस जीवनशैली को हमने पीछे छोड़ दिया आज वही "सस्टेनेबल लाइफस्टाइल" के नाम से वैश्विक समाधान के रूप में प्रस्तुत की जा रही है।

सतत जीवनशैली : छोटी आदतें, बड़ा बदलाव

----पृथ्वी को बचाने के लिए बड़े अभियानों से अधिक आवश्यकता हमारी छोटी-छोटी आदतों में बदलाव की है। प्लास्टिक, रासायनिक उत्पादों और अनावश्यक उपभोग ने प्रकृति के संतुलन को गहराई से प्रभावित किया है। ऐसे में रिसाइक्लिंग योग्य वस्तुओं को अपनाना, प्राकृतिक विकल्पों को प्राथमिकता देना, वस्तुओं का सीमित और गुणवत्तापूर्ण उपयोग करना तथा इलेक्ट्रॉनिक कचरे के प्रति सजग रहना आज समय की मांग है।अनावश्यक और कम गुणवत्ता का सामान ख़रीदने की अपेक्षा, कम और गुणवत्तापूर्ण ख़रीदारी होनी चाहिए।प्लास्टिक हमारे पर्यावरण और प्रकृति का सबसे बड़ा शत्रु है।प्लास्टिक और यूज एंड थ्रो जैसी वस्तुओं के स्थान पर बारंबार इस्तेमाल में आने वाले दूसरे विकल्पों को चुनें।

प्रकृति संरक्षण केवल "विकल्प" बदलने से नहीं,

बल्कि अनावश्यक उपभोग को सीमित करने और पुनः उपयोग की संस्कृति अपनाने से संभव होगा। शायद समय हमें फिर उसी तत्वों की ओर ओर लौटने का संकेत दे रहा है, जहां जल ,मिट्टी, कपड़ा और पुनः इस्तेमाल होने वाली वस्तुएं जीवन का स्वाभाविक हिस्सा रही।

प्रकृति से जुड़ाव : संवेदनशील जीवन की ओर

पर्यावरण से संबंध केवल बड़े जंगलों या नदियों तक सीमित नहीं, बल्कि घर की छोटी-सी बालकनी, आंगन या छत से भी शुरू हो सकता है।अपने हाथों से मिट्टी को स्पर्श करना, पौधों को उगाना और बच्चों को प्रकृति के निकट लाना केवल पर्यावरण संरक्षण नहीं, बल्कि संवेदनशील जीवनशैली की ओर एक कदम बढ़ाना है।आज के समय में भागदौड़, कृत्रिमता और मानसिक तनाव के बीच यदि अपने घर के किसी छोटे से कोने में एक फिश एक्वेरियम या छोटासा जल-सरोवर बनाते हैं, जिसमें रंग-बिरंगी छोटी मछलियाँ तैरती हों, कमल के फूल खिलते हों,तो यह संवेदनशीलता और प्रकृति से जुड़ने का एक सुंदर प्रयास बन सकता है।

पेड़ क्या सचमुच बोल सकते हैं?सचमुच हमसे बहुत कुछ कहना चाहते हैं। और यह कपोल-कल्पना भर नहीं है, किसी कविता का विषय नहीं है। वास्तव में पेड़ों के पास सचमुच का एक संचार-तंत्र होता है, जिसके जरिए वे अपने संदेश प्रसारित करते हैं।

पेड़ यक़ीनन हमसे बहुत कुछ कहना चाहते हैं, लेकिन उनके पास वही भाषा नहीं है वे दूसरे माध्यमों से स्वयं को व्यक्त करते हैं।शालवृक्ष बहुत ही सामुदायिक किस्म के वृक्ष होते हैं। भारतीय जनमानस को यह संज्ञान है कि शाल वृक्ष को अकेले विकसित करना असम्भव है। वे हमेशा एक छोटे-मोटे वन के रूप में ही विकसित होते हैं- शालवन।
कभी-कभी बालकनी से दिखने वाले आम नीम बरगद के पेड़ के साथ सुप्रभात होनी चाहिए। हर ऋतु में उनका बदला हुआ रूप जीवन के परिवर्तन और निरंतरता का संदेश देता है। आम्रबौर की नवांकुरित कोंपलों से उठती हल्की सुगंध और उसके इर्द-गिर्द गूंजता पक्षियों का कलरव मन को एक अनकही प्रसन्नता से भर देता है।

भागदौड़ से भरे इस समय में प्रकृति और उसके जीवों को निहारने का अवसर भी किसी सौभाग्य से कम नहीं लगता। वास्तविकता है कि मनुष्य चाहे जितना आधुनिक हो जाए, अंततः उसका मन प्रकृति की ओर लौटता ही है।यही लौटना सस्टेनेबिलिटी का प्रथम स्पर्श है बल्कि स्थिरता की ओर लौटता एक भावनात्मक कदम भी है ।
छोटे-छोटे प्राकृतिक दृश्यों से मनुष्य अनायास ही फिर से प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व सीखने लगता हैं ।प्रकृति के साथ बिताए गए छोटे-छोटे क्षण हमें भीतर से स्थिर और सकारात्मक बनाते हैं।
इसके लिए सबसे पहले तो प्रकृति का महत्व केवल पर्यावरण तक सीमित नहीं है। यह हमारी संस्कृति और जीवनशैली का भी महत्वपूर्ण हिस्सा है।

सूरीनाम : प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व का जीवंत उदाहरण है।
सूरीनाम का अधिकांश भूभाग घने उष्णकटिबंधीय वनों से आच्छादित है।यहाँ के विशाल वन, स्वच्छ नदियाँ, समृद्ध जैव-विविधता और प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र न केवल देश की पहचान हैं, बल्कि पृथ्वी के पर्यावरणीय संतुलन में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

सूरीनाम की पर्यावरणीय चेतना का सबसे बड़ा आधार वहाँ के आदिवासी और मरून समुदाय हैं। इन समुदायों ने सदियों से प्रकृति को संसाधन मात्र नहीं, बल्कि जीवनदाता और सहचर के रूप में देखा है। उनके पारंपरिक ज्ञान, जीवन-पद्धति और सांस्कृतिक मूल्यों में प्रकृति के प्रति सम्मान और संरक्षण की भावना गहराई से समाहित है। वे उतना ही लेते हैं जितना आवश्यक हो और प्रकृति को पुनः फलने का अवसर भी देते हैं। धूप और बारिश की यह प्राकृतिक जुगलबंदी भूमि को उर्वर बनाए रखती है और पेड़-पौधों के विकास को निरंतर गति देती है।
--भविष्य के लिए आज बदलनी होगी जीवनशैली

भारतीय ज्ञान परंपरा का यह शाश्वत सूत्र आज के तकनीकी युग में पहले से अधिक प्रासंगिक हो उठा है। आधुनिकता और तकनीक जीवन को सहज बनाने के साधन अवश्य हैं, किंतु जब यही साधन प्रकृति, संवेदनाओं और संतुलन पर भारी पड़ने लगें, तब आत्ममंथन आवश्यक होता है।
आज मानव ने अंतरिक्ष की दूरियां नाप ली पर उपभोग की अंधी दौड़ में हम असंतुलित जीवनशैली के शिकार हो गए। यदि आने वाली पीढ़ियों को सुरक्षित और सांस लेने योग्य भविष्य देना है, तो केवल “सस्टेनेबिलिटी” शब्द जानना पर्याप्त नहीं, बल्कि उसे जीवन में उतारना होगा। क्योंकि प्रगति तभी सार्थक है, जब वह मानव और प्रकृति दोनों के अस्तित्व को साथ लेकर चले।

रचनाकार
मनीषा आवले चौगांवकर दिल्ली

मुक्तक (विषय :पर्यावरण)

हरा हरा ये पौधा देखो संरक्षण देता हमें।
भरा भरा ये फूल फल से सब पोषण देता हमें।
जगत के सब मनुष्य सुनो ज़रा ये बात गौर से,
लेते जो श्वास तुम उसे पर्यावरण देता हमें।

रचनाकार
इंजी० आयुषी गुप्ता
गाज़ियाबाद

पर्यावरण दोहे

1.
धरती माता है दुखी, मानव हुआ निधून।
काटे वन, मारे पवन, बंजर हुआ प्रसून।।

2.
नदियाँ मैली हो गईं, सूखे निर्मल कूप।
कचरा-प्लास्टिक से भरे, सागर-नदी अनूप।।

3.
वृक्ष कटे आँगन घटे, छाया हुई निठूर।
तपती धरती जेठ में, सूरज बरसे क्रूर।।

4.
पंछी खोए नीड़ सब, चीखे बस्ती सून।
कहाँ उड़ें, कहाँ बसें, छाया बिना जनून।।

5.
धुआँ उगलती चिमनियाँ, काली हुई दिगंत।
साँस-साँस में घुल रहा, ज़हर भरा वसंत।।

6.
गंगा-यमुना रो रहीं, तट पर लाशों-ढेर।
पूजा-फल भी फेंकते, करते पाप घनेर।।

7.
ओज़ोन-छतरी फट गई, बढ़ा धरा पर शाप।
ग्लेशियर सब पिघल रहे, डूबे तट के आप।।

8.
"शिव" कहे अब चेतिए, वरना होगा अंत।
पेड़ लगाओ, जल बचाओ, यही मूल मंत्र।।

9.
प्लास्टिक त्यागो, प्रेम से, धरती को दो मान।
स्वच्छ हवा, निर्मल जल, तभी बचेगा प्रान।।

10.
धरती, नभ, जल, वायु सब, ईश्वर के उपहार।
रखो सुरक्षित इन सभी, तभी सुखी संसार।।

रचनाकार:
डॉ शिवनाथ सिंह "शिव", रायबरेली
मो. 9260996977

विजय लक्ष्मी भारद्वाज
बहादुर गढ़

पुष्पांजलि
सवैया छंद (श्रृंगार रस में)
विषय: पर्यावरण

धरती की शय्या सजी हरियाली चूनर ओढ़ी,
नदियाँ मुस्काती चलतीं, अमृत-रस धारों जोड़ी।
पवन सुगंधित मंद बहे, बन-उपवन हुलसाएँ,
पुष्पों की पाँखों पर जैसे रति भाव झलकाएँ।
कोयल की मीठी तान सजे, अम्बर भी इठलाता,
वृक्षों की छाया में जीवन राग नया गाता।
बागों में मधुमय लता लिपटी आलिंगन करती,
प्रकृति स्वयं श्रृंगार बने, हर श्वास में भरती।
पर आज धरा का सौंदर्य धूमिल-सा होता जाए,
धुएँ की परतें ओढ़े नभ आँसू भी छुप जाएँ।
आओ फिर से नव जीवन की हम ज्योति जगाएँ,
वन-वन हरियाली का श्रृंगार पुनः लहराएँ।
अंतिम पुष्पांजलि यह अर्पण, हृदय सुमन बरसाएँ,
"विजयलक्ष्मी" नाम सहित हम यह प्रण दृढ़ कर जाएँ।
धरती माँ के आँचल को फिर स्वर्ग-सा हम बनाएँ,
प्रकृति प्रेम की गंगा में जीवन दीप जलाएँ।

साहित्य 24

पर्यावरण

हर तरफ हीं जोर है,
मानव बड़ा कमजोर है।
अपनी सुविधा देखता,
मन में बैठा चोर है।।

हर साल बस पांच जून को,
पर्यावरण बचाने का दिखावा कर देता ।
एक पेड़ पकड़ कर,
दस लोग फोटो खिंचा लेता।

अगर सही मायने में चिंता होती,
सोचों इतनी जनसंख्या है कि,
एक एक पेड़ भी लगाया होता।
और देखभाल की होती तो,
अभी तक अमेजोन का जंगल
खड़ा हो गया होता।

मगर हम लोग तों बस एक दिन,
जन्मदिन की तरह मना लेते हैं।
बाकी तो हर रोज सुबह से,
लेकर शाम तक पर्यावरण का,
नुक़सान ही करते हैं ।

चाहे चिप्स के पेकेट,
चाहे कचरे का निपटारा।
नालियां चोक होती।
पानी की बरबादी।
स्वरूप बड़ी विडम्बना है,
पेड़ काटने में हम,
एक पल भी नहीं हिचकिचाते ।
और बातें करते हैं ,
पर्यावरण बचाने की।।

असल में पर्यावरण,
दिवस हर रोज ही है ।
क्यों कि रोज शुद्ध हवा चाहिए
रोज शुद्ध पानी चाहिए।।

यह सब तभी सम्भव है जब,
हम सभी एक एक पेड़ लगाए ,
और उनके बड़ा होने तक
रोज देख भाल करें।।

पानी की जितनी जरूरत ,
उतना ही स्तेमाल करें।
अपने आने वाली पीढ़ी को,
शुद्ध साफ़ पर्यावरण देकर जायें।।

रचनाकार
सूबेदार रामस्वरूप कुशवाह
बैंगलोर , कर्नाटक

DR BHAGAT VIEWS

पर्यावरणीय दोहे

जल संकट का हो रहा, रोज रोज विस्तार।
जगह जगह दिखता हमें, बढ़ता इस पर रार।।

सकल सृष्टि पोषक यही , बूंद बूंद जलधार।
तन मन पोषित हो रहे,सजते जीवन सार।।

जल से होती यह धरा, हरी भरी खुशहाल।
नहीं बहाएँ व्यर्थ यह, रखना हमको ख्याल।।

धरती से यदि मिट गया, जल निधि का अस्तित्व।
बिन जल क्या होगा भला, जीवन रूपी तत्व।।

बिन जल कल होगा नहीं, आप लीजिए जान।
संरक्षण मिल सब करो, यही आज का ज्ञान।।

धरती माँ बेचैन हैं, व्याकुल हैं सब जीव।
प्रभु बस इतना कीजिए, बचा लीजिए नींव।।

भावी संतति के लिए, वृक्ष लगाओ आप।
जिससे जग जीवन बचे,घटे सूर्य का ताप।।

आज प्रकृति के चक्र का, बिगड़ गया अनुपात।
जब से हम करने लगे, प्रकृति संग उत्पात।।

सुधीर श्रीवास्तव
गोण्डा उत्तर प्रदेश

विश्व पर्यावरण दिवस!

आज फिर
मना रहे हैं
१४३ देश
तुम्हारा ५४ वाँ
जन्मदिन,

आश्चर्य है
वर्षभर करते हैं
बलात्कार तुम्हारा
और आज के दिन
बहाते हैं
घड़ियाली आँसू
तुम्हारे शीलहरण पर,

खोज लेते हैं
कोई न कोई बहाना
अपना मुँह
उजला करने हेतु,

पीट रहे हैं ढिंढोरा
इस वर्ष
'प्लास्टिक को
पराजित करना है',

तुम्हीं कहो
क्या तुम्हारी पीड़ा
कम कर पाए हैं
ये नौटंकीबाज,

जब तक
नहीं लगाएँगे ये
अंकुश
अपनी दुर्धर्ष
लिप्साओं पर
तब तक
व्यर्थ है
भाँति-भाँति के
उद्घोष करना,

अच्छा तो ये है
कि
तुम्हारे ये पाखंडी रक्षक
करें घोर प्रायश्चित्
अपने अब तक के
समस्त पापों का
और करें भस्मीभूत
अपनी सभी
विगलित लिप्साएँ ,

करें संरक्षित तुम्हें
अपनी जननी
समझ कर,

निकल पड़ें
एक और
पाखंड खंडनी पताका
ले कर
विश्व भर के शेष
देशों की दिशाओं में,

करें दंडित
प्रत्येक उस जन को
जो मिल जाए
नाखून गड़ाता हुआ
देह में तुम्हारी,

दिखावे के
आरक्षण से
कुछ नहीं होगा,
तुम अरक्षित हो
और अरक्षित ही रहोगे...

१०.२५, ०५-०६-२०२६
पालम विहार, गुरुग्राम

दोहे

वृक्ष लगा पालन करे,रखते पावन प्रीत।
पर्यावरण सुधार की,सदा सनातन रीत।।

वृक्षारोपण पुण्य- फल,संस्कृति नियम असीम।
समय -समय पर पूजते,बरगद पीपल नीम।।

बढ़ा प्रकृति सौंदर्य को, रचते मनहर चित्र।
देते औषध संपदा, वृक्ष मनुज के मित्र।।

वृक्षों से सज्जित धरा,सहती नहीं अभाव।
प्रकृति संतुलन भी रहे,रुकता मृदा कटाव।।

वन की शोभा वृक्ष है,   संपति का आधार।
मिले फूल- फल औषधी,वैभव का भण्डार।।

पादप को काटें नहीं,उपयोगी हर पात।
श्वासों की संजीवनी,जीवन की सौगात।।

वृक्ष लगायें आप मिल,पंथ सजायें पाँत।
मिलती है छाया सुखद, पथिक सुखी सब क्लांत।।

पुष्पाशर्मा 'कुसुम'

कटते वृक्ष, बिगड़ता पर्यावरण
आओ आज पेड़ लगाते हैं।
धरती माता का श्रृंगार करते हैं।
धरती माता को पेड़ों से सजाते हैं।
धरती को ही स्वर्ग बनाते हैं ।

जंगल के पेड़ों को न काटो यारों ।
ऑक्सीजन कहाँ से पाओगे यारों ।
जंगली जानवरों,नदियों की रक्षा करो ।
पर्यावरण के संतुलन की रक्षा करो ।

प्रकृति ही जीवन है इसे समझो ।
एक पेड़ माँ के नाम की लगाओ ।
प्रकृति ही साधना है यारों,
पेड़ लगाओ,उसकी देखभाल करो ।

प्रकृति ही मानव अस्तित्व का आधार है, समझो ।
हर बच्चे के जन्म दिन पर पौधे लगाओ।
नव वधू के आगमन पर पौधे लगाओ ।
विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) को खास बनाओ ।

डॉO शशि रानी सिंह ,
बरेली ,उत्तर प्रदेश ।

मूक प्रतिस्पर्धा
****

एक ख़ूबसूरत स्त्री,
एक अबूझ पहेली सी,
प्रेम और सौंदर्य की प्रतीक
प्रकृति सी,
अनेक रूपों को
समेटते हुए
अपने मोहपाश में
बाँध लेती है सबको,
इसको देखकर
चैन पाता हर हृदय,
उमड़तीं अंतर्मन में
अल्हड़ लहरें,
फिर मन कहीं और
क्यों ठहरे?
इसके साथ
बिताए हुए पल
होते हैं
सुकून से भरे हुए,
इसकी गोद में
कभी माँ की
अनमोल गोद की
अनुभूति,
तो कभी प्रेमिका सी
हवा बन
सहलाती है,
यह प्रकृति है
यह सब सह लेती है!
बहुत मुश्क़िल है
वह सब कर पाना
जो यह कर देती है

पलक झपकते ही,
प्रकृति ने जैसे
संभाला है
अस्तित्व अपना
वैसे ही तो
सम्भालती है
नारीत्व अपना
एक स्त्री,
यह आज भी
देना ही जानती है
प्रेम में,
लेना इसके बस की
बात नहीं,
अधिकार है इसको
कि करे संरक्षित यह
अपने प्यार और सम्मान,
इसके रुद्र-रूप को
न ललकारो,
यह काली बन
कर देगी संहार,
फिर किसी के
काबू में भी
न आ पाएगी,
स्त्री व प्रकृति
प्रतिलिम्ब हैं
एक दूसरे के,
प्रकृति को
जितना कष्ट
पहुँचाओगे
उतना ही कष्ट
यह तुम्हें देगी,
हम इससे हैं
यह हमसे नहीं ।

पूनम अरोरा

पर्यावरण

पर्यावरण का नाम ,जैसे पावन कोई धाम
हमारे चारों ओर परिलक्षित -परि एवं आवरण से सज्जित।

अवनि पर जीवन का आधार
अनिल,सलिल, भोजन, आश्रय का दातार
उत्तम स्वास्थ्य, मानसिक शांति,सतत विकास
मानव-जीवन को पर्यावरण का उपहार। ।

सीमित हैं संसाधन, बढ रहा प्रदूषण,कट रहे वन
कैसे स्वस्थ रहेगा पर्यावरण ,त्राहि-त्राहि करेगा हर जन ।

पुकार-पुकार ये वन,ये वृक्ष कह रहे
हे मानव ! तुम्हारी हर आवश्यकता का हम ध्यान रखते
अनाज, फल-फूल, सब्जी,गोंद, रबर
शुद्ध आक्सीजन भरपूर देते। क्यों हमें सताते हो?
निर्लज्ज हो काटते जाते हो ।

हर वर्ष 5 जून को पर्यावरण दिवस मनाते
नये पादप रोपण का ढोंग करते
छलनी हमारी काया करते ।

कर लो प्रण आज से,अनावश्यक न हमें काटोगे
जन्मदिन पर सबको पौधे बांटोगे
नीम,बरगद, पीपल, आम लगाओगे
पर्यावरण शुद्ध बनाओगे ।।

नीना गुप्ता

विश्व पर्यावरण दिवस

पाँच जून 1972 में
विश्व जागृति एवं विकास हेतु
संयुक्त राष्ट्र
ने की थी घोषणा
विश्व पर्यावरण दिवस की,
स्वयं को जागृत करने का
सुरक्षा देने का
दिवस है पर्यावरण दिवस
1973 में एक नारा रखा गया
केवल एक पृथ्वी,
2025 में
"हमें प्लास्टिक प्रदूषण समाप्त करना है "
पर्यावरण संरक्षित है तो हम
सुरक्षित हैं .

साहित्य 24
प्रकाशन
पुस्तक प्रकाशन के लिए संपर्क करें..
9315701112
saahitya24@gmail.com

“गुलमोहर क्यों हँसा?”

आज गाँव के पास जंगल में
बने चौपाल पर मैं आ बैठा,
पेड़ों की फुसफुसाहट सुनकर
मैं कान लगाकर बैठ गया!

जंगल में उस दिन पेड़ों के बीच,
पर्यावरण पर बात हुई,
बरगद बाबा थे, बोले सबसे —
“धरती क्यों वीरान हुई?”

पीपल चिंतित था, बोला धीमे स्वर में —
“कटते हैं वन, बढ़ते जाते कारखाने,
धुएँ ने तो है अब घेरा नभ सारा,
और, सूख रहे नदियों के ताने।”

नीम भी उदासी में ये बोला —
“हवा अब शुद्ध कहाँ मिलती है,
मानव अपनी स्वार्थ अग्नि में,
हरियाली की साँसें छलती है।”

आम ने झुककर कहा दुखी हो —
“पक्षी अब घर ढूँढ नहीं हैं पाते,
कंक्रीटों के बनते ऊँचे जंगल
उनके सपनों को हैं डराते।”

तब गुलमोहर हँसकर बोला —
“अब भी समय बचा है भाई,
एक-एक पौधा सब रोपें,
फिर मुस्काएगी तरुणाई।”

शंभु अमिताभ
नई दिल्ली
17 मई 2026
दोपहर 15:48

पर्यावरण

(1) मौन पुकार
सुनें हर वृक्ष की..,
दें उन्हें प्यार !!

(2) बचा प्रकृति
स्वयं को ही बचाएं..,
खिलाएं कृति !!

(3) वन श्रृंगार
हो स्नेहिल स्पर्श से..,
दें उन्हें नीर !!

(4) पंचतत्वों से
सजी है ये प्रकृति.,
परा अपरा !!

(5) पर्यावरण
हो स्वच्छ जल वायु..,
तो बढ़े आयु !!

(6) है एक पेड़
सौ पुत्रों के समान..,
लगाएं पेड़ !!

(7) जीवन धरा
खिलाते चलें सदा..,
हो पुण्य भला !!

सुनीलानंद
शुक्रवार,
05.06.2026
जयपुर,
राजस्थान |

विश्व पर्यावरण दिवस

धरती माँ की प्यारी गोद,
पेड़ों से मिलती जीवन-ओढ़।
छाया, फल और शुद्ध हवाएँ,
ये हम सबको राह दिखाएँ।

जब जंगल कम होते जाते,
सूखे दिन फिर पास बुलाते।
बढ़ती गर्मी, घटता पानी,
रोती दिखती धरती रानी।

आओ मिलकर शपथ उठाएँ,
हर मौसम में पेड़ लगाएँ।
हरी-भरी हो हर इक डाली,
खुशियों से भर जाए हर क्यारी।

एक पौधा आज लगाओ,
कल का सुंदर भविष्य पाओ।
प्रकृति का सम्मान करेंगे,
मिलकर धरती धन्य करेंगे।

संदेश:
“पेड़ केवल प्रकृति की शोभा नहीं, जीवन की साँस हैं। आइए इस विश्व पर्यावरण दिवस पर एक पौधा लगाकर आने वाली पीढ़ियों के लिए हरी-भरी धरती का उपहार दें।”

सतविंदर कौर

पर्यावरण प्रथम

क्षिति की स्वच्छता का
जल की शुद्धता का
वायु की पवित्रता का
ना कर कभी हरण
रख शुद्ध पर्यावरण
रख शुद्ध पर्यावरण

(१)

सोचो जो पेड़ ना हों
पंक्षी कहाँ बैठेंगे?
तिनके भी फिर न होंगे
घोसले कैसे बनेंगे?

पेड़ों से होगी भूमि
बिल्कुल सपाट खाली
कहाँ फिर दिखेगी
वो विजन की हरियाली

न फूल होंगे ना फल
सुनेगा कौन कल-कल
नदियों का गीत मधुरिम
अनसुना होगा हर पल

पेड़ों के बिन तू रवि की
कैसे तपन सहेगा?
इसीलिए चेत जा रे
भविष्य क्या कहेगा?

पेड़ों से कर गठबंधन
रे मनुज तू आमरण
रख शुद्ध पर्यावरण
रख शुद्ध पर्यावरण .....

(२)

जीवित न इक बचेगा
जो जल ना शुद्ध होगा
मनुजों की बात छोड़ो
पशु कीट का क्या होगा?

बिन शुद्ध जल के मछली
जल बीच में तड़पेगी
जल जीव अनगिनत की
छाती भी तब धड़केगी

जल शुद्ध ना पिएगा
बीमार तू पड़ेगा
जीवन का महारण तू
बीमार ही लड़ेगा?

नदियाँ सरों कुँओं की
रखले मनुज सफाई
जल जमा हो कहीं गंदला
जमने ना दे तू काई

पानी से कर गठबंधन
रे मनुज तू आमरण
रख शुद्ध पर्यावरण
रख शुद्ध पर्यावरण .....

(३)

वायु ना कर प्रदूषित
वन खेत को जलाकर
आपस में ही रे तू लड़कर
बम फोड़कर धुआँ कर

न होगी शुद्ध वायु
तो साँस लेगा क्योंकर
जब साँस ही ना लेगा
घुट-घुट मरेगा खोकर

वाहन के प्रदूषण से
उद्योग के धूँए से
एसी की गैस से भी
कचरे के भी जलने से

मुरझाते पेड़ पौधे
जो हो अशुद्ध वायु
अशुद्ध वायु से तो
घट जाती सबकी आयु

वायु से कर गठबंधन
रे मनुज तू आमरण
रख शुद्ध पर्यावरण
रख शुद्ध पर्यावरण .....

"प्रकृति का करुण विलाप"

मैं प्रकृति हूँ...हाँ वही, जिसे तुमने कभी
"माँ" कहकर पुकारा था ।
मेरे आँचल में खिलती तुम्हारी हर सुबह,
मेरी गोद में सजती तुम्हारी हर शाम ।
मैंने ही तो सिखाया तुम्हें जीवन का प्रथम संगीत,
पवन की सरगम में,नदियों की लय में,
पत्तों की मृदुल थिरकन में ।
पर आज ! क्यों मेरे ही अस्तित्व पर
तुमने प्रश्नचिह्न लगा दिया?
क्यों काट दिए वो वृक्ष, जो तुम्हारी साँसों के संरक्षक थे ?
मैं चुप थी , जब तुमने मेरे आकाश को धुएँ से भर दिया।
मैं सहती रही ,जब तुमने मेरी नदियों में ज़हर घोल दिया ।
पर अब मेरी खामोशी तूफ़ान बनकर उठेगी ,
मेरी सहनशीलता प्रलय का रूप धरेगी।
हे मानव! अभी भी वक्त है
मेरी करुण पुकार को सुनो...
एक बीज प्रेम का बो दो,
एक वृक्ष जीवन का उगा दो ,
मेरी सूनी बाँहों को फिर से हरियाली से सँवार दो ।
स्मरण रहे !
मैं रहूँगी तो तुम रहोगे, मैं हँसूंगी तो तुम हँसोगे ,
अन्यथा मेरे अश्रु ही तुम्हारे अंत की कहानी लिख देंगे ।

—डॉ.संगीता पाहुजा

साहित्य 24
प्रकाशन
पुस्तक प्रकाशन के लिए संपर्क करें..
9315701112
saahitya24@gmail.com

पर्यावरण बचाओ

शुद्ध वायु हो पेड़ लगाओ, शुभ परिवेश बनाओ।
करो प्रकृति संरक्षित अब तो, पर्यावरण बचाओ।।

सदा खाद आर्गेनिक जैविक, मिथक रसायन तोड़ो।
कपड़े के थैले उपयोगी, पॉलिथीन को छोड़ो।।
सोलर पैनल को लगवाओ, रवि से काम चलाओ।
करो प्रकृति संरक्षित अब तो, पर्यावरण बचाओ।।

जल का संचय अब करना, नहीं करो बरबादी।
चलो साइकिल से या पैदल, धुआँ ग्रसित आबादी।।
बिजली का प्रयोग कर सीमित, समझदार बन जाओ।
करो प्रकृति संरक्षित अब तो, पर्यावरण बचाओ।।

मिट्टी के बर्तन उपयोगी, त्यागो प्लास्टिक वाले।
सब पहियों में हवा सही हो, कुछ पेट्रोल बचा ले।।
साफ हवा करते जो पौधे, उनको अभी लगाओ।
करो प्रकृति संरक्षित अब तो,पर्यावरण बचाओ।।

—सीमा वर्णिका

"पर्यावरण पर एक सृजन "

चहुँ दिशाओं में अँधकार
हो रही रोशनी की दरकार;
तुम दीप बनकर आओ!

मृग-तृष्णाएँ छल रही हैं
आस्थाएँ सब बदल रही हैं;
तुम विश्वास की आस जगाओ,
तुम दीप बनकर आओ!

हिम-शिलाएँ पिघल रही हैं
धरती तपन से जल रही है;
तुम इस प्रकृति को बचाओ,
तुम दीप बनकर आओ!

सुख की सरिता तरस रही है
नभ से अग्नि बरस रही है;
तुम बादल बन जल बरसाओ,
तुम दीप बनकर आओ!!

—डॉ.यशवंत भंडारी "यश"

वृक्ष की गुहार

काट कर मुझको ऐ मानव
बहुत जो ख़ुश हुए हो तुम ,
तुम्हें मालूम नहीं शायद
कितने क्रूर हुए हो तुम ,
ज़रा सोचो धरा पर जो
ये हरियाली नहीं होगी,
तो इस बंजर सी भूमी पर
कैसे साँसें भरोगे तुम!

हम वृक्षों को ज़रा देखो
सभी को मन से अपनाते ,
कहीं चिडियों का है खोता
डेरा चींटीं भी बनाते हैं।
हम पर विषधर भी
घर अपना बनाते हैं ,
ये सब परिवार हैं मेरे
क्यों बेघर इनको करते हैं!

तुम्हारी बढ़ती अबादी
हमारी क्यों घटाते हो ,
विधाता की,सृष्टि को तुम
क्यों नष्ट करते हो ।
कितना कर्जदार तू मेरा
वो कर्ज़ भी चुकाना है ,
यही गुहार है मेरी
तुम्हे मुझको बचाना है!

—डॉ.प्रियंका श्रीवास्तव

पर्यावरण : "पृथ्वी की पुकार"

धरती का हरित-वक्ष
मनुष्य ने स्वयं विदीर्ण किया,
नदियों के निर्मल नयनों में
विष का अंधकार भर दिया,
जो वृक्ष कभी
प्राणवायु का यज्ञ रचते थे,
आज कटे हुए कंठों से
मौन विलाप करते हैं,
पर्वत अपनी निस्तब्धता में
मानव का लोभ निहार रहे,
और थकी हुई नदियाँ
सभ्यता के पाप सँभार रहीं,
प्रभात का पक्षी-कलरव भी
अब करुण चेतावनी लगता है,
मानो स्वयं प्रकृति का उर
धीरे-धीरे टूटता है,
हे मानव! अभी भी लौट चल
संवेदना के उस वन में,
जहाँ वृक्षों को जीवन समझा जाता था
केवल ईंधन के कारण में नहीं,
क्योंकि अंतिम वृक्ष के गिरते ही
मनुष्य यह जान सकेगा
धरती केवल धरा नहीं थी,
वह स्वयं एक जीवित चेतना थी।

—ललित कुमार सक्सैना 'राही'

पर्यावरण
(कुंकुभ छंद)

घर आंगन में तपन बढ़ रही, उजड़ रहे जंगल सारे।
दूषित पवन विषैला करता, नगर गांव के गलियारे।
खनन अपरदन भू-भ्रंशन से, अब विनाश अतिसय होता।
मानव अपनी ही त्रुटियों से, नष्ट-भ्रष्ट होकर रोता।।

पौधारोपण हुआ कागजी, लोक वित्त की बरबादी।
संख्या-बृद्धि वनों की लेकिन,बाट जोहती बुनियादी।।
वातावरण प्रकृति का ऐसा, लगे व्यवस्था दरबारी।
मौसम भी अब करें शरारत, जैसे अप्सर सरकारी।।

बियाबान हो रहे वनों से, वन्यजीव बाहर आते।
पीड़ित क्षुधित अवस्था उनकी, नहीं पेट तक भर पाते।
मानव-बस्ती में घुस-घुस कर, लोगों को यह पशु खाते।
बिगड़ रहा संतुलन निसर्गी, हिंसक बनकर जब आते।।

धरती का संतुलन बिगाड़ा, हम सबने ही मनमाना।
वन्यजीव सँग संघर्षों का, मानव इतिहास पुराना।
अधिक विदोहन वन उपजों का, यह बनती वृत्ति हमारी।
पर्यावरण बिगड़ता प्रतिदिन, जो अति विनाश भयकारी।

जड़-चेतन के बीच संतुलन, हुआ बहुत ही अपकारी।
भ्रंशन और अपरदन की गति, है कितनी विप्लवकारी।
दूषित नीर लिए सरिताएं, मानवता को तड़पाएं।
भूजल बना समस्या सबकी, सरकारें भी घबड़ाएं।।

—संतोष हिन्दवी

सृष्टि का जीवंत उत्सव (पर्यावरण)

समूची प्राकृतिक संस्कृति हेतु
जीवन-संतुलन और
सहजीवी चेतना की
रक्षा के लिए रहे प्रतिबद्ध
जिसके बिना पृथ्वी का सौन्दर्य
और मानव जीवन का माधुर्य
है अधूरा
घर-आँगन की आत्मीयता
जीवन की सहजता
प्रकृति की मधुर लय
और स्मृतियों की जीवंत अभिव्यक्ति
खग कुल की चहचहाहट में
प्रातःकाल की पवित्रता
है जीवन का उल्लास
मनुष्य और प्रकृति के बीच
मधुर सेतु की भाँति
सुबहें जीवंत हो उठती थीं
हमारी संवेदनहीन होती जीवनशैली प्रकृति
से दूर होती मनुष्यता
पर्यावरणीय असंतुलन का
है एक गंभीर संकेत
आज का आधुनिक विकास
यदि हैं प्रकृति-विरोधी
तो वह समृद्धि नहीं
है विनाश का मार्ग
पृथ्वी केवल मनुष्यों की ही नहीं
असंख्य प्राणियों की भी
हैं साझा धरोहर,जो बनाए हुए हैं
सृष्टि का संतुलन ,पर्यावरण-संरक्षण
जैव-विविधता-संरक्षण और
मानवीय करुणा की पुनर्स्थापना
अपने जीवन में प्रकृति के लिए
जागृत संवेदना देती हैं जीवनदृष्टि को जन्म
बने प्राकृतिक जीवन-अभ्यासी
निभाए सांस्कृतिक और
नैतिक उत्तरदायित्व भी
जीवन का सौन्दर्य
विशालता में ही नहीं
होता हैं लघुता में भी
शक्ति केवल प्रचण्डता में ही नहीं
होती हैं कोमलता में भी
प्रकृति का उत्सव केवल
पर्वतों, नदियों और वनों में ही नहीं
होता है सम्पूर्ण प्रकृति तंत्र के साथ
हमारा आत्मीय संवाद
प्राकृतिक संतुलन की
हो पुनर्स्थापना के लिए
रहे सजग, संवेदनशील और सक्रिय
चूंकि जीवन की सहजता का संगीत
ही है प्रकृति की मुस्कान
और यहीं है सृष्टि का जीवंत उत्सव।

—डॉ. राकेश छोकर

पर्यावरण(सांसों की सरगम गाएगा)

धुएँ ने ढक ली सूरज की स्वर्णिम निर्मल रेखा,
मानव अपनी करनी से खो बैठा प्रकृति का लेखा।
वायु में धूल घुली है, जल में भी विष की धार,
भूमि हुई बीमार यहाँ, और आकाश हुआ लाचार।

रोशनी कैसे फैले जग में, जब मन में तम हो गहरा,
स्वार्थों की आँधी में डूबा शहर का हर चेहरा।
सूख रही हैं नदियों की धारा, रोते हैं वन उपवन,
कटते वृक्ष पुकार रहे हैं — “बचा लो मेरा जीवन।”

त्याग करें लोभ, पृथ्वी का दोहन, अब यह संकल्प करें,
हर आँगन में हो शीतल छाया और पावन दीप धरें।
एक-एक पौधा रोपें, जीवन की बगिया का वंदन करें,
मिट्टी, नभ और पवन का फिर से अभिनन्दन करें।

प्रकृति के संग चलेगा मानव जब छोड़ेगा प्रवृति आसुरी।
जीवन में बजेगी फिर मधुर प्राणवायु की बाँसुरी।
उज्ज्वल आकाश होगा और दूर होगा मन का अंधेरा।
सांसों की सरगम गाएगा फिर सुखमय नया सवेरा।

-ओम सपरा

साहित्य 24
प्रकाशन
पुस्तक प्रकाशन के लिए संपर्क करें..
9315701112
saahitya24@gmail.com

पर्यावरण

पर्यावरण सुरक्षित हो
लौटो सनातन की ओर,
ब्रह्ममुहुर्त में जागरण हो,
सूर्योदय से पूर्व स्नान हो,
सूर्य नमस्कार हो,
तुलसी का वंदन हो,
वृक्ष जल सिंचन हो,
ऊषा का प्रारंभ हो
प्रकृति से जुड़ाव हो,
नियमों का पालन हो,
जीवन सरल सात्विक हो,
जल, वायु , पृथ्वी,आकाश
अग्नि का, साक्षात दर्शन हो,
बरगद,पीपल,नीम, हितैषी हैं ,
इनका संरक्षण हो,
प्रकृति का सानिध्य हो,
विकास तो जरूरी है,
किन्तु संतुलन हो,
पर्यावरण कभी तुम्हारे,
कार्यों से दूषित न हो,
वृक्ष लगाते रहो,
उन्हें पालना लक्ष्य हो,
श्वान नहीं, गो का पालन हो,
जमीन से जुड़ो,
पर्यावरण शुद्ध हो जायेगा,
सोच बदलो,सब बदल जायेगा।।

—डॉ.वीणा शंकर शर्मा 'चित्रलेखा'

साहित्य 24
साहित्य 24 प्रकाशन
पुस्तक प्रकाशन के लिए संपर्क करें..
9315701112
saahitya24@gmail.com

“सह-अस्तित्व की ओर”

पेड़ों की छाँव में आज भी मुझे
सभ्यता से अधिक सच्चाई मिलती है।
मिट्टी से उठती वह सौंधी खुशबू
किसी महंगे इत्र से कहीं अधिक जीवित लगती है।

हमने शहरों को ऊँचा तो बहुत बना लिया,
पर आकाश छोटा कर दिया।
नदियों को बाँधते-बाँधते
हमने अपने भीतर के बहाव को भी रोक दिया।

कभी किसान के हाथों में मौसम धड़कता था,
अब मौसम समाचारों में डर बनकर आता है।
धरती थकती होगी शायद,
जब उसके सीने पर हर दिन
एक नया कंक्रीट उग आता है।

मैं सोचती हूँ,
क्या विकास वही है
जिसमें पक्षियों की आवाज़ें धीरे-धीरे गायब हो जाएँ?
या फिर विकास वह है
जहाँ एक बच्चा मिट्टी में खेलते हुए
धरती को माँ की तरह महसूस कर सके।

पर्यावरण केवल जंगलों,
नदियों और पहाड़ों का विषय नहीं है,
यह हमारे भीतर बची संवेदनाओं का भी प्रतिबिंब है।
जब मन लालच से भर जाता है,
तब धरती का संतुलन भी डगमगाने लगता है।

प्रकृति हमेशा हमें सिखाती रही है —
धीरे बहना, धैर्य से खिलना और बिना शोर के देना।
शायद जिस दिन मनुष्य फिर से
सादगी, संतोष और सह-अस्तित्व को समझ लेगा,
उस दिन नदियाँ भी स्वच्छ बहेंगी,
पेड़ फिर निडर होकर झूमेंगे,
और प्रकृति केवल बचाई नहीं जाएगी,
बल्कि फिर से प्रेम की तरह महसूस की जाएगी।

—अपर्णा शर्मा

पर्यावरण
****

अपनी आँख बंद करें
और पर्यावरण के
सच्चे मित्रों के बारे में सोचें,
निस्संदेह दो नाम
उछल कर
उपस्थित हो जाएँगे
सुन्दर लाल बहुगुणा
और 'ग्रीन एवेंजर' अधिवक्ता
एम.सी.मेहता,
काश हमारा नाम भी सामने आ पाता!
वस्तुतः हमें तो ढिंढोरा पीटने की आदत है,
चलो पर्यावरण के लिए
हम भी कुछ करें
मनसा, वाचा, कर्मणा,
किसी सरकार को चैन की बंसी न बजाने दें,
नित्य आईना दिखाते रहें,
स्वयं पर्यावरण बन कर
पूछें तमाम तर्कसंगत तीखे सवाल,
तभी हम
'द ग्रीन एवेंजर' जैसा
कुछ बन पाएँगे।

—डॉ.चन्द्रमणि ब्रह्मदत्त

पर्यावरण

बन्द कर दिये ताल तलैया, बन्द सभी सरोवर हैं,
नदियों में कचरा घर का, काटे सभी तरुवर हैं।
कच्ची भूमि बची न आँगन, प्यासी धरती आकुल,
चहुँओर कंक्रीट के जंगल, ख़ुश बहुत मान्यवर हैं।

नभ से थोड़ा जल बरसा तो, मानव उससे घबराया,
अपनी सुविधा की ख़ातिर, भू जल दोहन करवाया।
नहीं मिला जब जल धरा को, बंजर धरती कराह उठी,
सूखा बाढ़ का दोषी भी, मानव ने कुदरत को बतलाया।

बहुत स्वार्थी मानव जिसने, खेल अनुठे थोपे हैं,
लालच में वृक्षों को काटा, पुनः स्वार्थ में रोपें हैं।
नित नया प्रदूषण फैलाकर, पर्यावरण को रौंद रहा,
न जाने कितने ख़ंजर मानव ने, मानवता को घोपे हैं।

डॉ अ कीर्ति वर्द्धन

छंद कुण्डलिया

(१)
===================
काटे तुमने पेड़ क्यों, रे मानव मतिअंध ।
कहाँ मिलेगी अब तुम्हें, छाया और सुगंध।।
छाया और सुगंध, कहाँ अब पहले जैसी।
करके कमरे बंद, चलाये कूलर ऐसी।।
कहे आज घनश्याम, तेज लू लगे कराटे।
किसको दें इल्ज़ाम, पैर ख़ुद अपने काटे।।

(२)
====================
बदले - बदले से लगे, मौसम के हालात।
बिगड़ रहा पर्यावरण, बिन मौसम बरसात।।
बिन मौसम बरसात, पड़े सर्दी में गर्मी।
करता नित आघात, मनुज में रही न नर्मी।।
पेड़ बचा घनश्याम, समझ जा अब भी पगले।
धरा करे श्रृंगार, रूप फिर अपना बदले।।

घनश्यामसिंह किनियां कृत
सीकर राजस्थान

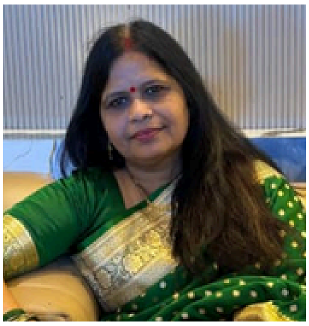

योग, जीवन निरोग

धरती माँ की गोद में, जब साँसों का मेल हुआ,
योग ने सिखलाया हमको, प्रकृति से कैसा खेल हुआ।

वृक्षासन में खड़े हुए जब, वृक्षों का मान किया,
धरती पर पैर टिकाकर, पर्यावरण को प्रणाम किया।

भुजंगासन सा लहराए, निर्मल गंगा की धार,
योग से शुद्ध हो मन अपना, शुद्ध रखें संसार।

प्राणायाम की हर साँस कहे, वायु को स्वच्छ बनाओ,
प्लास्टिक-कचरा दूर हटाकर, धरती का कर्ज चुकाओ।

सूर्य नमस्कार जो करता, सूर्य का सम्मान करे,
ऊर्जा बचाकर वही मनुष्य, धरती का कल्याण करे।

शवासन में लेटे-लेटे, शांति का पाठ पढ़ाया,
शोर-प्रदूषण त्याग कर, मौन का महत्व बताया।

योग हमें सिखलाता है, तन-मन-पर्यावरण की डोर,
तीनों का संतुलन साधो, तभी बजेगी सुख की भोर।

आओ मिलकर कसम खाएँ, योग को जीवन में लाएँ,
पेड़ लगाएँ, जल बचाएँ, धरती को स्वर्ग बनाएँ।

क्योंकि साँस है जो चल रही, वो पर्यावरण का दान है,
और योग से उसे साधना, यही सच्चा सम्मान है।

संजू मिश्रा

sahitya
साहित्य 24
प्रकाशन
पुस्तक प्रकाशन के लिए संपर्क करें..
9315701112
saahitya24@gmail.com

प्रकृति की सौगात

सूरज तुम अच्छे हो, सुबह सवेरे उगते हो।
सोने सा रोज दमकते हों,खुद जल कर आग उगलते हो।
दुनिया को रौशन करते हो, खुशियों से जीवन भरते हो।
धरती को गर्मी देते हो,जल को बादल में बदलते हो।
बादल तुम अच्छे हो रो लेते हो,
जल के रूप में बरसते हो।
धरती को जीवन देते हो,हरा भरा कर देते हो।
सब की भूख मिटाते हो,सबको जीवन देते हो।
चंदा तुम भी अच्छे हो,रोज रात को दिखते हो।
आसमान में चमकते हो,तम को तुम हर लेते हो।
चांदी सा रोज चमकते हो,शीतलता दे जाते हो।
सबकी थकन मिटाते हो,चेतनता दे जाते हो।
सागर तुम अच्छे हो, खुब मचलते हो ।
लहरों से अठखेली करते हो,नित मंथन करते रहते हो।
जलचर को जीवन देते हो,
रेत और बालू देकरके मानव का घर बनवाते हो।
नमक सभी को देते हो,खाने का स्वाद बढ़ाते हो।
हवा तुम अच्छी हो, निरंतर बहती रहती हो।
बिना रुके बिना थके,सदा तुम चलती रहती हो।
जग को सांसे देती हो,प्राण सभी में भरती हो।
सबको जीवन देती हो,सब के दुख हर लेती हो।
जीवन चलने का नाम है प्यारे, ये संदेशा देती हो।
पक्षी तुम अच्छे हो उड़ लेते हो,नित नई उड़ान भरते हो
स्वच्छंद विचरण करते हो, निज आजादी का अनुभव करते हो।
पराधीन सपनेहुं सुख नाही, ये संदेशा देते हो।
माली तुम अच्छे हो,गुलशन में नित नये फूल खिलाते हो।
जीवन रुपी बगिया को, खुशबू से महकाते हो।
रंग बिरंगे फूलों से, सृष्टि में रंग भरते हो।
खुश रहने का संदेशा, हर प्राणी को देते हो।
भगवन तुम माली इस गुलशन के, ऊर्जा सभी में भरते हो।
जीवन फूलों सा खिला करके, मीठी यादों में रखते हो।
मानव तू भी अच्छा बन जा,प्रकृति के प्रति सच्चा बन जा।
दूसरों के लिये, कुछ अच्छा कर जा।
कर्म तेरे हो कुछ ऐसे, मीठी यादों में बस जाएं जैसे।
भावी पीढ़ी भी दे आसीसें ,तू प्रकृति से आज सीख ले।
लेने से देने में सुख ज्यादा, निःस्वार्थ भाव से काम किये जा।
प्रकृति को तू नमन किये जा, प्रकृति

शोभा शर्मा

पेड़ काटना पाप बड़ा है....

पौधे ही हैं प्राण हमारे लगते हमको बहुत ही प्यारे।
इनके कारण हम जीवित हैं मानवता के यही सहारे।।

प्रदूषण का शोषण करते मानवता का पोषण करते,
जीवन का श्रृंगार यही हैं धरती का आभूषण बनते।

हरीभरी हो धरा जहां पर जीवन वहीं पर संभव होता,
वसुंधरा का हरियाली ही - सचमुच बंधु ! वैभव होता।

जीवन का पर्याय मान लो श्वासों की सरगम मानो,
उत्साहित जीवन का बंधु ! साथी इनको हरदम जानो।

पेड़ काटना पाप बड़ा है पैरों पर कुल्हाड़ी मत मारो,
जीवन का आधार पेड़ हैं - यही बात हृदय में धारो।

कविता का संगीत पेड़ हैं- वीणा की झंकार पेड़ हैं,
'गांडीव ' की टंकार पेड़ हैं योद्धा की हुंकार पेड़ हैं।

नदियों का संरक्षण करना मानवता का है धर्म यही,
जल की बर्बादी नहीं करेंगे है सबसे पुण्य कर्म यही।

जलसंचय में रहस्य छिपा है जीवन की रसधारा का,
विश्व गुरु के नाम से पूजित - भारत देश हमारा था।

हवन - यज्ञ से जुड़कर देखो- प्रकृति मित्र कहाओगे,
ईश्वर का संदेश वेद में - मानव को भेद बताओगे।

गाओ गीत हरियाली के पेड़ों के मित्र बन कर देखो,
'राकेश' सभी के मित्र बनोगे थोड़ा सा चलकर देखो।

डॉ राकेश कुमार आर्य

औषधि

यही औषधि, यही प्रकृति का उपहार,
पृथ्वी के अमरत्व का यही आधार।

हरी रहने दे इनकी हरी काया,
इनके आश्रय में मिलती शीतल छाया।

देते हैं ये जीवन वायु,
इन्हें रहने दे दीर्घायु।

चारों ओर व्याप्त है जल से थल,
फिर क्यु संकट मे है इनका कल।

इनके दामन में मिलते मीठे फल,
जल देकर लौटाऐ इनका प्रतिफल।

पेड़ को काटने में लोग यु भेड़ हो गए,
क्यों इंसानियत की राह में सब ढेर हो गए?

अमित कुमार पांडेय"अमित कृष्ण

विश्व पर्यावरण दिवस

धरती मां का आज करें हम मिलकर अभिनंदन,
हरियाली से महके अपना प्यारा राष्ट्र-चंदन।

नदियां निर्मल, वन हों घने, स्वच्छ रहे आकाश,
प्रकृति संग हो प्रेम हमारा, यही समय की आस।

पीपल, बरगद, नीम लगाएं, जीवन का उपहार,
हर पौधा देता है हमको सांसों का आधार।

धुएं, प्रदूषण, स्वार्थ त्यागकर लें ऐसा संकल्प,
आने वाली पीढ़ी पाए सुंदर जीवन-कल्प।

पर्वत, सागर, खेत, बगीचे गाए नव जयगान,
हरित धरा के संग बढ़ेगा भारत का सम्मान।

आओ मिलकर वृक्ष लगाएं, यही सच्चा वंदन,
धरती मां का आज करें हम मिलकर अभिनंदन।

अनीता "अंतर्मन"

राष्ट्राभिनंदन

वसुंधरा के भाल पर हरियालियों का ताज हो,
आनंदित वन-उपवन में फिर जीवनमय मधुमास हो।

कल-कल करती नदियां गाती स्नेह भरे नव गान,
नीला अम्बर बांटता सबको शीतलता का दान।

पीपल की छाया में बैठें सपनों की मुस्कान,
बरगद की बाहों में पलता भारत का अभिमान।

माटी की सौंधी खुशबू में धरती मां का पावन प्यार,
प्रकृति नहीं संसाधन केवल, है जीवन का आधार।

काट रहे हैं जिस डाली को हम,उसी पर है हमारा वास,
स्वार्थ में अंधे बन न निगले मानवता का प्रकाश।

आओ मिलकर वृक्ष लगाएं, यह प्रकृति और युग का आह्वान,
हर पत्ता और पेड़ है राष्ट्रप्रेम का जीवंत महागान।

शुद्ध वायु, निर्मल जलधारा, हरितिमा ही धरा का धन,
इनसे ही सुरक्षित होगा हमारा आने वाला जीवन।

विश्व पर्यावरण दिवस पर लें ऐसा संकल्प महान,
हरा-भरा हो देश हमारा, बढ़े विश्व में मान।

धरती मां के चरणों में श्रद्धा-सुमन चढ़ाएं,
प्रकृति पर्यावरण संरक्षण से भारत का यश पाएं।

अनीता "अंतर्मन"

साहित्य 24 प्रकाशन
पुस्तक प्रकाशन के लिए संपर्क करें..
9315701112
saahitya24@gmail.com

साहित्य 24

ऐसी आपदा न फिर होने पाए

ऐसी आपदा फिर ना होने पाए
आओ हम प्रकृति को बचाएं
सब मिलकर खूब पेड़ लगाएं
वन उपवन को फिर से सजाएं

नदी और झरना को बहने दो
जंगल को भी हरा भरा रहने दो
पेड़ , पहाड़ों को जिंदा रहने दो
इनको भी तो खुलकर जीने दो

पहाड़ों पर बढ़ाते रहे ऐसे आबादी
 रोक नहीं सकेंगे हम फिर ये बर्बादी
तरक्की के नाम पर इन्हे ना बांधो
हम सब ,दे दो इनकी भी आजादी

ना जाने कितने ही गांव उजड़ गए
ना जाने कितनेअपनो से बिछड़ गए
जो अब तक साथ - साथ थे यहां
ना जाने वो सब अब किधर गए

प्रकृति हमारी भूल को क्षमा करना
फिर ऐसा रौद्र रूप कभी ना धरना
ग्लेशियर पहाड़ों का सम्मान करेंगे
आप सदा ही हमारी रक्षा करना।

ना जानें ये कैसी विपदा है आई
डर का सब घरों में बैठे हैं भाई
न जाने कैसी रूद्र है ये महामारी
बढ़ रही है चारो तरफ ही लाचारी

कितनो के रोजी रोटी छीन गया
जाने कितनो के अपने लील गया
मौत का तांडव यहां हर ओर पसरा
छाया है चारो ओर मातम गहरा

कैसा भाग्य का यह खेल विधाता
क्यों बेमौत यहां इंसान है मरता
शमशानो में भिड़ लगी है अजब
दो गज जमीन भी नहीं मिल पाता

सुनीता पुनिया

स्वार्थी इंसान

यह धरा अब सोचती है
किस तरह का बीज बोऊ
स्वार्थ में अंधा ये इंसा
सोच को कैसे मिटाऊं।

वृक्ष धड़ा धड़ काट कर क्यूं
आपदा को बुला रहे
इस धरा की सुंदरता को
स्वार्थ सिद्ध में मिटा रहे।

फूलों से ये भरी डालियां
स्वप्न में रह जाएंगी एक दिन
नदी तालाब झरनों का गान
सूख कर रह जाएंगे एक दिन।

पक्षियों का कलरव सुहाना
क्या कभी सुन पाएंगे हम तुम
पशु पक्षियों का तोड़कर घरौंदा
क्या कभी बस पाएंगे हम तुम।

आओ मिलकर कसम ये खाएं
जगह जगह नये पेड़ लगाएं
अपने पर्यावरण को फिर से
साफ स्वच्छ और हरा भरा बनायें।

(संजो रानी "संजना")

"चलो धरा को सजाएँ"

सुंदर आकर्षक धरा को , ग्रहण कैसे लग गया।
चारों तरफ फैला प्रदूषण , हद से हद बढ़ गया ।

एक तरफ घुट गया दम , हवा में घुलते जहर से ।
दूसरी तरफ जान निकल रही , प्लास्टिक के कहर से।

धुएँ ने कहर बरसाया , पराली भी कहाँ कुछ कम रही ।
वाहनों की हुई भरमार , वनों की कटाई भी शामिल रही ।

कोयले के दहन से तो , धरा साँस ही नहीं ले पाती है।
कीटनाशकों का अत्यधिक प्रयोग , उर्वरता पर बात आती है।

धरा का देखो मानव ने , कितना बुरा हाल किया।
विकास के नाम पर , इतना दुर्व्यवहार किया ।

आओ मिलकर हम ,धरा को फिर जीना सिखाए।
उजड़े वन उपवन को ,फिर से हरा भरा बनाए।

स्वच्छ रखे इसे ऐसे , असल में शिक्षा का दर्पण दिखाए।
विकास के नाम पर , न विनाश की राह दिखाए।

जो पढ़ा है किताबों में , उसको चित्रित कर जाए।
आओ हम सब मिलकर, पेड़ों से धरा को सजाएँ।

सीमा पुरबा ' सिम्मी '

साहित्य 24
प्रकाशन
पुस्तक प्रकाशन के लिए संपर्क करें..
9315701112
saahitya24@gmail.com

पर्यावरण (हास्य कविता)

धरती माँ का सुंदर आँचल,
पेड़ों से है इसकी शान।
कल कल कर नदियाँ गाती THI मधुर तराने,
मीठी धुन से महक रहा था सारा जहान।
युग आया एक, और पेड़ कटे कुछ लालच मे
 बोला,सूरज
"अब तो बस राज है मेरा
फैलूंगा धरती पर बिना रोकटोक K!"
छाँव न पाकर राहगीरों की,
गर्मी में हालत खस्ता हुई ।

फिर आया प्लास्टिक का भूत ,
लेकर अपना बड़ा SA थैला।
सबने मिलकर उसे भगाया,
बोले"भागो, मत फैलाओ गंदगी KA मेला!"
कपड़े के थैले अपनाए, पॉलीथिन को दूर भगाया

आओ प्रण ले हम सारे आज
जल की हर बूंद बचाकर सूखे से देश बचाएँ
RO का बेकार पानी सफाई में करे इस्तेमाल
सब्जी दाल धोकर पानी पौधों को द दे जान
सब्जी के छिलके और चाय पत्ती से खाद बनाएं

जंगल धरती के पहरेदार
बाढ़ को देते हैं टक्कर।
पर्यावरण की रक्षा करके
बनायें जीवन और भी बेहतर

संगीता गुप्ता

देश की धरती

देश की धरती।
कुछ माँग रही मुझसे
बहुत कुछ देती मुझको
देने से मना नहीं किया उसने
पर ख़ुद भी तो संवरना चाहती है
यह ही तो कह रही वो आज

 कुछ ख़ास दिन याद ना करो
उस वर्दीवाले की तरह -
हर दिन याद करो मुझको
तुम्हारे पैरों के नीचे ही तो हूँ
जरा झुक कर मुट्ठी में लेकर
माथे से लगा लो मुझको
मैं भी तो कुछ महसूस करती हूँ
बस सिर्फ़ रौंदो ना मुझको
मेरी सुगंध को बना लो अपना

कह रही है मेरे देश की धरती
तेरी आँखों के सामने हूँ मैं
लहलहाते खेत है पर्वत हैं
नदियाँ हैं वृक्ष है वादियाँ हैं
इन सबने ही तो सवारा है मुझको
इनके लिये तरसती हूँ मैं
इनके बिना कैसे रह सकती हूँ

मेरे देश की धरती कुछ कहती है
सजाओ सवारों सींचो मुझको
मान रखो मेरा सम्मान करो सबका
मेरे किसी भी अंग का अपमान न करना
दर्द होगा मुझको बहुत दर्द होगा
सभी तो अपने हैं सभी तो मेरे हैं

एक बार सबको गले लगा
फिर मिल कर बोलो
मेरे अपने सब मिल कर बोलो
मेरे देश की धरती
सलाम तुझको जय हिन्द
तभी तो अच्छा लगेगा
बुलंद जय हिन्द

चन्द्र मोहन भगत

आसमाँ से बरसती आग

आसमाँ से बरसती आग बदन झुलसा रही है,
सूरज की वक्र दृष्टि रौद्र रूप दिखला रही है।
पुष्प उपवन के सारे आजकल कुम्हला रहे हैं,
रास्ते की उष्ण रेत पाँव नंगे जला रही है।

हिमनद विशाल पिघल रहे हैं ग्लोबल वार्मिंग से,
हम अभी भी है बेख़बर नेचर की वार्निंग से।
सूख जाएंगे नदी, नाले और ताल-तलैया,
हम एसी में देख रहे ख़्वाब मगर चार्मिंग से।

सघन वृक्षों की छाया अब याद बड़ी आती है,
एक उनकी छाया चैन ताप में दे जाती है।
परन्तु हम काट रहे हैं वृक्षों को अंधाधुंध,
नहीं समझ रहे हम कि तरुवर प्रकृति की थाती हैं।

कूलर, एसी और फ्रिज हुए हैं अब मित्र समान,
कृत्रिम ठंडक पा रहे हैं बच्चे-बूढ़े-जवान।
अगर कर लिया होता पर्यावरण का संरक्षण,
तो सहना नहीं पड़ता गर्मी का प्रकोप महान।

© राजेश कुमार 'राज'

साहित्य 24
साहित्य 24 प्रकाशन
पुस्तक प्रकाशन के लिए संपर्क करें..
9315701112
saahitya24@gmail.com

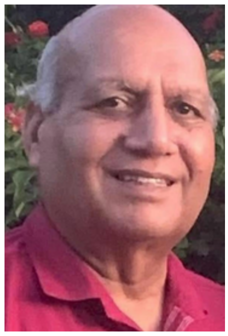

पर्यावरण दिवस पर विशेष

जो बोल नहीं पाते -हम उन्हें कह देते हैं बेजान
पेड़ बोलते नहीं -मगर अल्फ़ से ही है उनकी पहचान

पेड़ देते हैं छाया और फल
चलते तो नहीं होते हैं अचल
हवाओं का रुख बदलने का रखते हैं मादा
कार्बन डाइआक्साइड खा कर आक्सीजन देते ज़्यादा
पक्षियों का बसेरा बन उठते हैं -जैसे ही ढलती है शाम
पेड़ बोलते नहीं -मगर अल्फ़ से ही है उनकी पहचान

पेड़ बादलों को भी संचालित करते हैं
बहने नहीं देते माटी इतना दम रखते हैं
पानी इकत्रित करते हैं अपनी शाखाओं और जड़ों में
कुछ पेड़ शामिल हो जाते हैं बड़ों में
हज़ारों वर्ष जिन्दा रहते हैं -जाकर देखो वृन्दावन जहॉं रहते हैं श्याम
पेड़ बोलते नहीं -मगर अल्फ़ से ही है उनकी पहचान

जब तक पेड़ हरे भरे जवान रहते हैं
छाया देते हैं फलों फूलों की बरसात करते हैं
राहगीरों का सहारा बन जाते हैं पेड़
दिन रात रास्ता बताने की पहचान बन जाते हैं पेड़
पेड़ों के अपने नाम हैं ,काम हैं -अपनी आन वान और शान
पेड़ बोलते नहीं -मगर अल्फ़ से ही है उनकी पहचान

पर्यावरण संतुलित करने में इनका है बड़ा योगदान
आदमी के काम ही आते हैं सूखे पेड़ जिन्हें कहते हैं बेजान
पलंग कुर्सी अलमारी मेज़ तक इन्हीं से बनते हैं
मृत देह को श्मशान में जलाने का भी साधन बनते हैं
इनकी क़ुर्बानी ही कहूँगा "वीरेन्द्र "-मत हो हैरान
पेड़ बोलते नहीं -मगर अल्फ़ से ही है उनकी पहचान

जो बोल नहीं पाते -हम कह देते हैं उनको बेजान
पेड़ बोल नहीं पाते -मगर अल्फ़ से ही है उनकी पहचान

वीरेन्द्र कुमार मन्सोतरा
उप कमांडेंट सीमा सुरक्षा बल (रीटायर्ड)
उद्योग विहार , सैक्टर 22
द्वारका नई दिल्ली -110077
Mob 9213912121

कंक्रीट की नगरी

बिलख रही है आज वसुंधरा, करती करुण पुकार है।
उजाड़ दिया तुमने प्रकृति को,जो मेरा अतुल श्रृंगार है।

विध्वंस मचा डाला अरे तुमने! हरे-भरे वन का संघार किया।
बिन सोचे-समझे मानव ने! क्या-क्या ना सत्यानाश किया।।

लेकर नाम विकास का तुमने,प्रकृति का महाविनाश किया।
जीवन को जीवन न समझा ,बस वसुधा का उपहास किया।।

खग-विहंग सब लुप्त हो रहे, मानव दानव के समान है।
सभ्य-असभ्य कहना है किसको, मचा हुआ ये ज्वाल है।।

कितना भी तुम मूढ़ बनाओ,प्रकृति की बुद्धिमत्ता निराली है।
वन-वृक्ष-बल्लारियों से हो विहीन, रूठी वसुधा रानी है।।

कहीं पहाड़ का छोटा कद कहकर,चलता क्रशर मशीन है।
नदियों का रुख मोड़- मोड़ कर, करते स्वयं के अधीन हैं।

सूख रही नदियाँ नित देखो, सिसकते कुआँ-तालाब है।
गंगा-यमुना रो-रोकर कहती हैं, निकल रही अब जान है।।

पर्यावरण दिवस मना कर,नन्हे पौधे संग सेल्फी लेकर।
हाँ जहाँ जन्मे है वहीं कृतघ्नता,नए-नए नित स्वाँग रचाकर।।

किस भ्रम में तू पड़ा है मानव! दरबे का हाँ मालिक बनकर।
देख दहकता कंक्रीट की नगरी,जहाँ-तहाँ अब लंका बनकर।।

फलदार वृक्ष भले न बन पाओ, छायादार बनो कम से कम।
आम-अमरूद गर लगा सको ना,लगा ही दो नीम-अश्वत्थ।।

निशा भास्कर
नई दिल्ली।

निरीह ताल!

समुद्र को ले डूबने की
मंशा है मनुष्य की
तभी तो गाँव और शहरों के
तालाब और पोखरों की
सिसकियाँ सुनाई पड़ने लगी हैं।
दफन हो रहे हैं
वे धीरे-धीरे
सीमेंट और रेत के मलबा
और कूड़ा-कर्कट से
वह तालाब-
जो बहता था नदी-सा।
एक धार उससे निकलती थी।
सुदूर गाँव के पश्चिम
खेतों की सिंचाई के लिए।
वह फसल की प्रत्येक जड़ों को
नमी देती थी।
और तालाब की स्नेह पा
झूम उठते थे फसल।
उन फसलों की खुशबू समेट
हवाएं गाँव को फागुनी
महक से भर दिया करती थी।
ओह!
अब वह कचरो में दफन हो गया है ।
वह तालाब जो भर देता था
ढेरों मटके एक साथ पनिहारिनों के
गूंजते थे सुर-ताल वहाँ
मल्हार और फगुआ की।
अब वह खुद गाद में डूबकर
प्राण त्यागने लगा है।
देखा है मैंने उसके कब्र को
जहाँ उग गए हैं-
विशाल कंक्रीटो के महल और
खिल गए हैं बेशकीमती
गाड़ियों के पोर्च।

निशा भास्कर
नई दिल्ली।

" हरा भरा था देश हमारा "

आओ सुनाऊं तुम्हें कहानी
धरती पर स्वर्गलोक की
प्राचीन समय की बात है मित्रों
ईश्वर ने की धरा पर
एक सुंदर स्थान की रचना
जो समय की धारा पर बहता
आगे चल कर
भारत वर्ष कहलाया
हरा भरा था देश हमारा
वृक्षों से भरपूर था
वृक्षों की शाखाओं पर बैठे पक्षी
गीत हर्ष के गाते थे
ठंडी पवन जब चलती थी
ऐसे लगता था जैसे वह
मधुर नगमें गुनगुनाती थी
प्रकृति का सौंदर्य
सभी का मन हर्षाता था
ऐसा शुद्ध वातावरण था यहां पर
जो सभी के मन को भाता था
पूर्ण स्वच्छता का वह दौर था
गंदगी बहुत कम थी तब
कूड़े कर्कट का न ही
उन दिनों कोई अधिक शोर था
ऊंचे पहाड़ तथा बहती नदियां
हमारे गौरवशाली राष्ट्र की
समृद्ध संस्कृति की
मधुर गाथा गाती थीं
पर्यावरण शुद्ध था तब
बर्षा की भी भरमार थी
खेतों में खूब अनाज था उगता
लोगों का जीवन खुशहाल था
फिर समय का चक्कर घूमा
भौतिकतावाद की लहर चली
शहरीकरण की आंधी उठी
औधोगीकरण का दौर चला
देश प्रगति पथ पर था
परन्तु जाने अनजाने में
पर्यावरण प्रभावित हुआ
प्रकृति से खिलवाड़ हुआ
मानव का स्वार्थ जागा
लालच भी उसका कम न था
वृक्षों को उसने काटा
नदियों, कुओं के जल को
गंदा कर डाला
भूल गया मूर्ख मानव
जल नहीं तो कल नहीं
बहुत जल उसने बर्बाद किया
वातावरण को प्रदूषित करके
मनुष्य ने पर्यावरण का
संतुलन बिगाड़ा
ग्लोबल वार्मिंग को जन्म दिया
बर्षा कम होने लगी
खेतों में अनाज कम हुआ
मानवता का नुक़सान हुआ
आओ हम सब जागें
और पर्यावरण की रक्षा का
दृढ़ प्रण लें
हर मानव एक वृक्ष लगाए
ताकि हरियाली भरपूर हो
बादल गरजें और बर्षा हो
हर मानव के चेहरे पर
एक मधुर मुस्कान हो
जल को न हम व्यर्थ गंवाए
स्वच्छता भी हर और हो
हरा भरा हो फिर से देश हमारा
मानवता के भाईचारे का जोर हो
विश्व पटल पर पर्यावरण क्षेत्र में
भारत वर्ष का प्रथम स्थान हो।

प्रो. (डॉ.) योगेश चन्द्र सूद
सूद कॉटेज, प्रोफेसर कॉलोनी, मैहतपुर, जिला ऊना,
हिमाचल प्रदेश -174315
दूरभाष : 7018655242

प्रकृति

मैं प्रकृति हूँ।
कोई प्रवृत्ति नहीं।।

तुम ही नहीं जो,
मुझ पर आश्रित हो।।

इंसान की इंसानियत को,
मैनें आज गिरते देखा है ।।

लालच, ईर्ष्या, द्वेष कपट में ,
अपनों के खून पीते देखा है।।

आपस में लड़ने वाले,
मुझे आज लूट रहे हैं।।

युगों से आश्रय देती रही,
तुम्हारा पालन करती रही।।

हर रोग में आस बनी ,
हर मर्ज की दवा रही।।

हरे भरे वन उपवन ,
सर्वत्र मेरे श्रृंगार थे।।

कल-कल करते झरने,
सर्वत्र मेरे संगीत थे।।

तेरी अनंत इच्छाओं में,
तेरी अनंत जिज्ञासाओं में।।

तेरी भौतिकता की प्यास में,
मेरा वजूद कहीं खो गया है।।

अणु परमाणु मेरे अंश हैं,
ये आज जीवन में दंश है।।

इनके प्रभाव में तेज है,
बचेंगे नहीं जो तेरे वंश हैं ।।

मैं घूट रही हूँ।
मैं टूट रही हूँ।।

मैं लूट रही हूँ,
मैं फूट रही हूँ।

आज मैं नाराज हूं ,
तुम्हारी अब हकीकत हूं।

मेरी आवाज सुन लो,
मेरी आगाज सुन लो।

मन तो मेरा करता है,
सब कुछ बहा ले चलूं।

भूचाल ऐसा ला दूँ।
तेरे निर्माण को ढहा दूँ।।

बवंडर ऐसा ला दूँ।
हाहाकार मचा दूँ।।

आग ऐसा लगा दूँ,
सब कुछ खाख कर दूँ।।

तुमने बदलते हर कल को देखा है,
मैं तुम्हें बदलने की शक्ति रखती हूँ।।

तुमने मेरी सहनशीलता को देखा है,
मैंने कई सभ्यताओं को मिटते देखा है।।

तुम मुझसे मत खेलो,
अपने वजूद को बचा लो।।

अभी भी वक्त बचा है,
अपने को बचा लो।।

मुझको अपने हाल पर ,
अपनी जिंदगी के लिए छोड़ दो।।

रचनाकार : डॉ उमेश कुमार पांडेय

प्रकृति

प्रकृति की गोदी में पलता, जीवन का हर एक सवेरा है,
सूरज अपनी स्वर्ण किरण से, जगमग करता बसेरा है।
नदियाँ कल-कल गीत सुनाएँ, पर्वत देते शीतल छाया,
फूलों की मुस्कान में जैसे, ईश्वर ने सौंदर्य सजाया।

पेड़ों से मिलती शुद्ध हवाएँ, वर्षा का वरदान यही,
वन-उपवन से महक रहा है, अपना भारत देश यही।
चिड़ियों का मधुर कलरव मन में, नव आनंद जगाता है,
हरियाली का आँचल धरती के सारे दुख हर जाता है।

जब-जब मानव लालच में आकर, जंगल काट गिराता है,
सूखी नदियाँ, रूठे बादल, केवल संकट पाता है।
धुआँ-धुआँ अम्बर हो जाता, दूषित होती फुलवारी,
रोती गंगा-यमुना देखो, फैली कैसी बीमारी।

आओ मिलकर वृक्ष लगाएँ, हर बंजर में फूल खिलाएँ,
जल संरक्षण का संदेशा, जन-जन तक हम पहुँचाएँ।
धरती माँ का ऋण चुकाना, हम सबकी जिम्मेदारी है,
प्रकृति से जो प्रेम करे वही, सच्ची मानवता धारी है।

पूजा भारद्वाज

पर्यावरण

जहाँ पेड़ पौधा उगा, देते जीवन दान।
करते सेवा लोग जो ,होते बड़े महान।।

हरे भरे तरुवर जहाँ, देते हमको छाँव।
मानव उसको काटता , मिलता कहीं न ठाँव।।

देखो यह पर्यावरण , कितना है अनमोल।
जीवन में सबसे बड़ा, पेय सुधा रस धोल।।

करें भूमि श्रृंगार जब, हरियाली है जान।
अनुपम आभा देखकर, बढती उसकी शान।।

आदत सभी सुधार लो,कहते ज्ञानी लोग।
हर आँगन में पेड़ हो, बड़ा सुखद संजोग।।

विटप लगा कर करें, आस-पास को शुद्ध।
जीवन में आए नहीं, कोई भी अवरुद्ध।।

रास्ते में है फेंकते,कचरा कूड़ा लोग।
सड़ने पर है फैलता, जाने कितना रोग।।

आशा कहती सर्वदा, काटों न कभी पेड़
रखवाली करना सदा, करना मत तुम छेड़

रचनाकार- आशा उमेश पान्डेय अविरल

पर्यावरण

हरीभरी धरा को यूँ
ना उजाड़िये
आने वाली पीढ़ी को
कुछ दे के जाइए....
हरिभरी धरा.......

रोकिए वनों की इस कटाई को
सुना सुना इस तरह ना कीजिए
है धरा सुहासिनी हरियाली से
इस तरह तबाह नाही कीजिए
साथ उसके चलकर
गुनगुनाइए.....
आने वाली पीढ़ी..........

सांसो की आधार प्राण प्यारी है
इनसे ही तो अपनी जिंदगानी हैं
पूर्वजों के जैसै ही इनको जानिए।
करिए सेवा वृक्ष की कहानी है।
सीधी सी बात है सबको बताइये..
आने वाली पीढ़ी ....

घट रही है सांसें घुट रहे है दम
आओ पौध मिलकर लगाये हम
दे गये निशानियां जो जा चुके
विरासतें जो दे गये बचाइये
मुस्कुराती इस धरा को ना बचाइए.....
आने वाली पीढ़ी को कुछ दे के जाइये...
हरिभरी धरा को यूं ना उजाड़िये.......
आने वाली पीढ़ी.........

स्वरचित पूनम दुबे "वीणा"
अम्बिकापुर छत्तीसगढ़

विश्व पर्यावरण दिवस पर जनक जिला में तीन दिवसीय विशेष अभियान संपन्न प्लॉग रन, प्लास्टिक जागरूकता व बीज संग्रहण से 500 से अधिक नागरिकों को किया जागरूक

नई दिल्ली, 8 जून 2026:

विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में पश्चिमी दिल्ली के जनक जिले में पर्यावरण संरक्षण दिल्ली (PSG) द्वारा 5 से 7 जून 2026 तक वृहद स्तर पर तीन दिवसीय पर्यावरण जागरूकता अभियान चलाया गया। यह अभियान दिल्ली प्रांत के सह संयोजक श्री पुनीत सूद जी के मार्गदर्शन एवं पीएसजी जनक जिला संयोजक श्री राघवेन्द्र शुक्ला जी के संयोजन में संपन्न हुआ। जनक जिला की युवा शक्ति प्रमुख डॉ. नेहा गुप्ता को अभियान प्रमुख का दायित्व सौंपा गया। अभियान में जनक जिले के अंतर्गत विकासपुरी, जनकपुरी, हरिनगर, सुभाष नगर एवं नांगल के 20 से अधिक स्थानों तथा विभिन्न पार्कों में प्लॉग रन, प्लास्टिक उन्मूलन जागरूकता अभियान, बीज संग्रहण एवं वृक्षारोपण जैसे कार्यक्रम आयोजित किए गए। गतिविधि के सदस्यों ने विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के सहयोग से इन कार्यक्रमों का संचालन किया।इस अभियान का मुख्य उद्देश्य नागरिकों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करना तथा स्वच्छ, हरित एवं सतत भविष्य के निर्माण हेतु सामुदायिक सहभागिता को प्रोत्साहित करना था।

अभियान का शुभारंभ 5 जून 2026 को प्रातः 6:30 बजे गौरी शंकर डीडीए पार्क, विकासपुरी से हुआ, जिसका उद्घाटन पूर्व निगम पार्षद श्रीमती सरिता जिंदल द्वारा किया गया। कार्यक्रम में डीडीए एवं एमसीडी के अधिकारियों व कर्मचारियों ने भी सक्रिय सहभागिता निभाई।

अभियान के समापन समारोह का आयोजन 7 जून 2026 को ए एवं एजी-1 ब्लॉक एसोसिएशन, विकासपुरी में किया गया, जहां निगम पार्षद श्री साहिब असीवाल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने यह आश्वस्त किया कि एक दिन विकासपुरी निश्चित रूप से जीरो वेस्ट कॉलोनी बनेगी और इसके लिए उनका हर संभव सहयोग सदैव उपलब्ध रहेगा। समारोह में नागरिकों को ऊर्जावान बनाने हेतु जुम्बा सत्र से शुरुआत की गई। केवल प्लाग रन में दो ब्लॉकों से 92 किलोग्राम प्लास्टिक कचरा एकत्रित किया गया । 120 kg विकासपुरी और 80 kg अन्य सभी स्थानों से एकत्रित किया गया। पर्यावरण के प्रति प्रतिबद्धता दिखाते हुए टीम ने 200 किलोग्राम प्लास्टिक कचरे को लैंडफिल का हिस्सा बनने से रोका और सीधे पुनर्चक्रण हेतु भेजा। साथ ही बड़ी मात्रा में विभिन्न प्रजातियों के बीज भी संग्रहित किए गए, जिन्हें आगामी वृक्षारोपण अभियान में उपयोग किया जाएगा। तीन दिवसीय अभियान में 500 से अधिक नागरिकों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक किया गया।

इस पर्यावरण अभियान में 8 वर्ष के बच्चों से लेकर 80 वर्ष के बुजुर्गों तक सभी ने कंधे से कंधा मिलाकर भागीदारी की। डॉ. नेहा गुप्ता ने अपने संदेश में स्पष्ट किया कि केवल जागरूकता से बदलाव नहीं आएगा, बल्कि हर व्यक्ति को समाधान का हिस्सा बनना होगा, समस्या का नहीं। उन्होंने हर घर,हरित घर को अभियान का मूल मंत्र बताते हुए नागरिकों से पर्यावरण संरक्षण में सक्रिय भागीदारी का आह्वान किया। विशेषकर गृहणियों से आह्वान किया गया कि वे प्लास्टिक का उपयोग घटाएँ और उसे लैंडफिल में भेजने के बजाय एकत्रित कर पुनर्चक्रण हेतु दें। यदि घर-घर से यह पहल शुरू हो, तो निश्चित ही पर्यावरण संरक्षण एक जन-आंदोलन बन जाएगा।

शब्दों की शक्ति, विचारों की अभिव्यक्ति
साहित्य से समाज तक हमारी प्रतिबद्धता

साहित्य 24
Publication

100 लेखक
100 किताबें
एक ऐतिहासिक उपलब्धि!

साहित्य 24 प्रकाशन

की ओर से

जुलाई माह में 100 पुस्तकों का भव्य प्रकाशन!

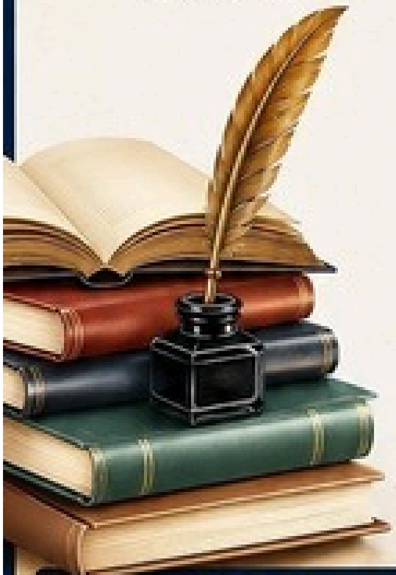

एक प्रयास
राष्ट्रीय पुस्तक रिकॉर्ड के लिए

आपका नाम, आपका किताब, देश के रिकॉर्ड में शामिल!

हिंदी | अंग्रेज़ी | पंजाबी

सोलो या एंथोलॉजी – किसी भी विधा में

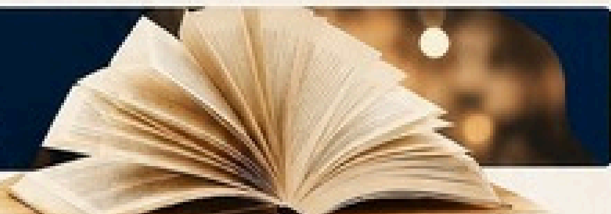

प्रकाशित भी, लोकार्पित भी!

आपकी पुस्तक को मिलेगा वह मंच, जिसकी वह हकदार है!

क्यों चुनें साहित्य 24 प्रकाशन?

- प्रोफेशनल संपादन
- आकर्षक कवर डिज़ाइन
- उत्तम प्रिंट क्वालिटी
- व्यापक प्रचार-प्रसार
- भव्य लोकर्पिण समारोह
- राष्ट्रीय स्तर पर पहचान

ऑर्डर करें और प्रतिभागी बनें इस भव्य कार्यक्रम का

स्थान: दिल्ली

- लेखकों को प्रमाणपत्र
- उत्कृष्ट पुस्तकों को सम्मान
- मीडिया कवरेज और इंटरव्यू
- पुस्तक बिक्री में पूरा सहयोग
- लेखक समुदाय से जुड़ने का अवसर

सीमित सीटें!
अभी पंजीकरण करें

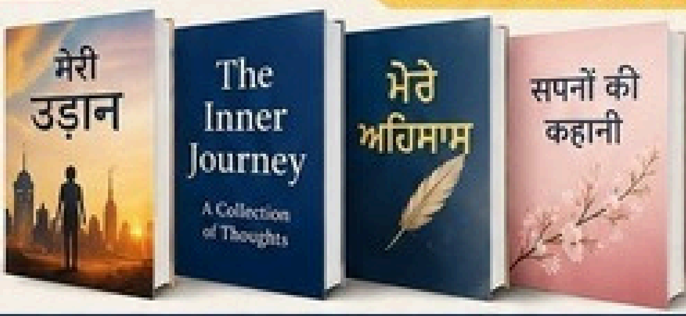

ईमेल: saahitya24@gmial.com
वेबसाइट: www.sahitya24.com
संपर्क करें: 9315701112

आइए, मिलकर रचें इतिहास – 100 किताबें, एक क्रांति!